Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

वेद प्रकाश

निवेदन : 'चतुर्वेद संहिता' के सदस्यों से

उपरोक्त योजना के सम्बन्ध में हमें आपके पत्र प्राप्त हुए 'ऋग्वेद' छप चुका है, जिल्द बन रही है, इसमें कुल ४१५ पृष्ठ हैं तथा अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद और मन्त्रों की सूची मिलाकर कुल ५५० पृष्ठ और बनेंगे। इस तरह से यह ग्रन्थ कुल ९६५ पृष्ठ का बनेगा। एक ही खण्ड में देने से बहुत वजनी हो जाएगा, इसीलिए इसे दो खण्डों में देने का निर्णय लिया है। पहले खण्ड में ऋग्वेद होगा तथा दूसरे में बाकी तीनों वेद व मन्त्रों की सूची होगी।

पहला खण्ड २० अगस्त से भेजना शुरू करेंगे तथा दूसरा खण्ड भी शीघ्र देंगे। दो खण्डों में देने से इसकी लागत में कुछ वृद्धि हुई है, इसीलिए दूसरा खण्ड हम आपको रु० ५०.०० की वी.पी.पी. से भेजेंगे। इतने बड़े ग्रन्थ का दो खण्डों में होना आपके लिए भी सुविधाजनक होगा।

कृपया इस ग्रन्थ को दो खण्डों में लेने की स्वीकृति शीघ्र भेजें। यदि आप इसे स्वीकार नहीं करते हैं तो सम्पूर्ण ग्रन्थ छपते ही आपको एक ही खण्ड में भेजेंगे परन्तु आपको कुछ प्रतीक्षा और करनी होगी।

सहयोग की आशा के साथ।

—अजयकुमार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोध-कथा

कभी किसी से उम्मीद न करो

कई वर्ष पुराना प्रसंग है, एक बड़े कार्यक्रम में अहमदाबाद में एक श्रद्धालु, कर्मठ, धुनी आर्य सज्जन से मिलने का सुयोग हुआ। उनकी कर्मठता, लगन देखकर उनके प्रति श्रद्धा जगी तो उनकी व्यक्तिगत स्थिति से दुःख भी हुआ। उन्हें न पूरा दीखता था, न भली प्रकार सुनाई देता था। उनकी शारीरिक अक्षमता के बावजूद उनका क्रियाशील जीवन प्रेरणा देता था। उनके अतीत के बारे में जिज्ञासा करने पर पहले तो उन्होंने टाला परन्तु बहुत आग्रह करने पर बतलाया-

"विभाजन से पूर्व वह पंजाब में रेलवे के गार्ड थे, उनकी पत्नी भी विदुषी थी। उनके चार बेटे थे, अचानक ४५ वर्ष की आयु में पत्नी का देहान्त हो गया, उस समय उनकी पत्नी ३५वर्ष की थीं। पत्नी के स्वर्गवास के बाद उनके जीवन का मकसद हो गया, वह पूरी मेहनत से चारों बेटों को ऊंची शिक्षा दें और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करें। वह हर सप्ताहान्त में बच्चों के पास जाते, उनकी प्रगति और सुख-सुविधा का पूरा ख्याल करते। पिता के साथ माता की पूरी जिम्मेदारी भी उन्होंने निबाही।

उनके परिश्रम का फल हुआ, चारों पुत्र पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो गए, दो डाक्टर बन गए,तीसरा इंजीनियर बना तो चौथा अच्छी सरकारी नौकरी पर लग गया। चारों बेटों के अच्छे वैवाहिक सम्बन्ध भी हो गए। थोड़ी मेहनत से चारों के मकान भी बन गए। उनके भव्य मकान में गृहप्रवेश से एक दिन पहले बेटों-बहुओं के बीच चर्चा चली--सब ने कहा-शुभ मुहूर्त पर सब बातें तो ठीक हो जाएंगी, केवल एक कमी खटकेगी। हमारे पिता जी की हाजरी की। उनके मुंह पर एक सफेद दाग है, उन्हें ऊंचा सुनाई देता है, पूरा दीखता भी नहीं, उनका मेहमानों को क्या परिचय दिया जाए। अच्छा हो उस मौके पर उन्हें कहीं बन्द कर दिया जाए।

ठीक मुहूर्त के मौके पर बेटे आए पिता से कहा-पार्टी के हल्ले-गुल्ले में आपको तकलीफ होगी, आपको एकांत में पहुंचा दें। बेटे पिता को पकड़कर ले गए और स्टोर में बन्द कर गए। देर रात तक जश्न हुआ, पार्टी में अच्छी रौनक रही, जब सब मेहमान चले गए तब उन्हें स्टोर से बाहर निकाला गया।

सारी आपबीती सुनाकर वह वृद्ध आर्य सज्जन बोले-"मैंने उसी दिन घर छोड़ दिया। बेटों के प्रति मेरा जो फर्ज था, उसे मैंने ईमानदारी से पूरा किया। बेटों से उम्मीद तो मैं पहले ही नहीं करता था, पर उस घटना के बाद उस घर में मेरा टिकना असम्भव हो गया।"

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ४६ अंक १ वार्षिक मूल्य : बीस रुपये अगस्त १६६६

सम्पा॰ **अजयकुमार** आ॰ सम्पादक : **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

ऋषि दयानन्द कीर्तिगान

पं० नारायणप्रसाद बेताब

बचपन में ही कवि बेताब के लोकप्रिय भजन **'अजब हैरान हूं भगवन्–तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं।'** की पंक्तियां मेरी जिह्वा पर चढ़ गई थीं। मेरे पितामह प्रायः इस भजन को मेरे मुख से सुनते तथा निराकार परमात्मा के इस विदग्धतापूर्ण वर्णन को सुनकर प्रसन्नता अनुभव करते। वर्षों पश्चात् जब हिन्दी नाटक साहित्य का विशद अध्ययन किया, तो पारसी रंगमंच के प्रसंग में नारायणप्रसाद बेताब की नाट्यकला से परिचय प्राप्त किया। राजकीय महाविद्यालय पाली के सेवाकाल में वहां के एक आर्यसमाजी मित्र श्री जगदीशचन्द्र आर्य (अब वे अपने नाम के साथ जैन लगाते हैं) ने बेताब के प्रसिद्ध मुसद्दसों के अनेक पद्य सुनाये जिनमें मृतक श्राद्ध की निस्सारता बताई गई थी तथा मूलशंकर के शिवरात्रि प्रसंग को अत्यन्त रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया था। पाठक इन पद्यों को इसी पुस्तक में पढ़ेंगे।

कुछ समय पश्चात् इन चारों मुसद्दसों का 'दयानन्द-दिग्दर्शन' शीर्षक संग्रह मुझे जोधपुर के घण्टाघर के समीप एक कबाड़ी की दुकान में मिल गया। इसको सम्पादित कर मैंने आर्यप्रेमी कार्यालय अजमेर से १९७४ में प्रकाशित कराया। इस बीच बेताब पर एक बृहत् शोध ग्रन्थ पढ़ने के लिए मिला, जिसे उनकी सुपुत्री सौ॰ विद्यावती नम्र ने मुम्बई विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. की उपाधि के लिए लिखा था। इससे बेताब की सर्वतोमुखी प्रतिभा तथा उनके कृतित्व का विस्तृत परिचय मिला।

मुसद्दस शैली की कविता उर्दू की एक लोकप्रिय विधा है। बेताब द्वारा रचित इन मुसद्दसों को पढ़कर पाठक जहां उनकी काव्य-रचना से प्रभावित होंगे वहां इनमें विवेचित ऋषि दयानन्द के जीवन के विविध प्रसंगों का अनुशीलन करने का अवसर भी उन्हें मिलेगा। इसी अभिप्राय से यह पुस्तक सम्पादित की गई है।

–भवानीलाल भारतीय

चैत्र पूर्णिमा २०५३ वि०

रत्नाकर, नन्दनवन, जोधपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० नारायणप्रसाद बेताब–व्यक्तित्व एवं कृतित्व

–डा० भवानीलाल भारतीय

'अजब हैरान हूं भगवन्, तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं।' इस प्रसिद्ध भजन के रचयिता पं० नारायणप्रसाद बेताब को सम्भवतः नई पीढ़ी के आर्यसमाजी भी भूल गये होंगे। निर्गुण, निराकार तथा अखिल ब्रह्माण्ड के नियामक परमात्मा का षोडशोपचार पूजन कथमपि सम्भव नहीं है, इस शास्त्र प्रतिपादित तथ्य को काव्यमयी अभिव्यक्ति देने वाले बेताब उच्चकोटि के कवि तथा नाटककार तो थे ही, सिद्धान्तमर्मज्ञ विद्वान् भी थे। उन्होंने हिन्दी नाटकों को नया रूप, नई भाषा तथा नई शैली प्रदान की तथा धार्मिक, ऐतिहासिक एवम् सामाजिक विषयों को लेकर जो नाटक लिखे, उनमें उनकी आर्यसमाजी विचारधारा का सुधारवादी स्वर स्पष्टतः सुनाई पड़ा।

बेताब का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा, सं० १९२९ वि० (१८७२) को उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के औरंगाबाद नामक कस्बे में हुआ। इनके पिता का नाम पं० दुल्लाराय था जो व्यवसाय से हलवाई थे। सरस्वती के इस वरद पुत्र को प्रारम्भ में शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। यद्यपि उन्होंने विधिवत् काव्य-रचना की कोई शिक्षा नहीं ली थी, किन्तु तुकबन्दी करने का शौक उन्हें बचपन से ही था। धीरे-धीरे वे उर्दू में गजलें लिखने लगे तथा हिन्दी पद्य-रचना में उनकी प्रवृत्ति हो गई। उर्दू कविता में ये सरदार मोहम्मद खां तालिब को अपना उस्ताद मानते थे। हिन्दी कविता में उनका मार्गदर्शन पं० श्लेषचन्द्र वैद्य ने किया।

इस सदी के आरम्भ में बेताब दिल्ली में अपने भाई के पास रहते थे। पारसी नाटक कम्पनी से उनका परिचय और प्रवेश कैसे हुआ, इसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है–"बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में दिल्ली में उस समय कोतवाली के पास रामा थियेटर तैयार हुआ था। उसमें जमींदार साहब की नाटक कम्पनी खेल करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगी। उस समय बेताब जी दिल्ली के एक प्रेस में पांच रुपये मासिक पर साधारण नौकर थे। कम्पनी का विज्ञापन इसी प्रेस में छपता था। इस प्रकार बेताब का परिचय इस नाटक कम्पनी से हुआ, विशुद्ध दर्शक के रूप में। नाटक कम्पनी ने उन्हें नाटक देखने के लिए पास दिया और वे नाटक देखने गये।'' इसके आगे का वर्णन उन्हीं के शब्दों में–

''जमींदार की कम्पनी के उस समय नाटककार थे बाबू धपनत 'बेकस'। एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि बेकस की अनुपस्थिति में कम्पनी को एक नये गाने की जरूरत हुई। कम्पनी के मैनेजर ने दिल्ली के एक लेखक बालमुकुन्द जी से कहा कि हमें एक ऐसे शायर की जरूरत है जो उनके लिए एक गाना बना दे। बालमुकुन्द जी ने उत्तर दिया कि मेरा छोटा भाई (बेताब) आधी रात तक सितार पर ताना रीरी करता रहता है, अकसर गजलें भी मुशायरों में पढ़ता है, उसे भेज देता हूं। अगर उससे कुछ काम निकल सका तो कुछ देना भी नहीं पड़ेगा क्योंकि वह स्वयं यहां आने के लिए उत्सुक रहता है। भाई साहब ने मुझ से आकर कहा, ''लो भई, आज तुम्हारी शायरी की परीक्षा का दिन है। जाओ, रामा थियेटर से प्रश्नपत्र ले आओ। देखें, तुम्हारी टूं टूं कुछ अर्थ भी रखती है या यूं ही है। इस खुशखबरी को सुन कर मैं आपे से बाहर हो गया। कुर्ता पहनना दुश्वार था। भाई ने एक चिट्ठी दी, मानो चलते पुर्जे के पर लगा दिये। मैं उड़कर मैनेजर साहब की सेवा में जा पहुंचा और कार्यकर्ताओं द्वारा गाने की ध्वनि, ताल, मौका इत्यादि नोट कर लिया। उस समय मेरे शरीर में बला की बिजली भर गई थी। पांव जमीन पर, कलम कागज पर, निगाह अक्षरों पर और मन विषय पर नहीं ठहरता था। पूर्णोत्साह जैसा अच्छा काम ले सकता है, ऐसा अच्छा टकों का लालच भी नहीं ले सकता। रात में वह गाना लिख डाला। शुद्धाशुद्ध की ईश्वर जाने, परन्तु कम्पनी के उच्च अधिकारियों को वह शब्दावली बहुत ही पसन्द आई। उस समय कम्पनी के बड़े कर्मचारी चार थे। इनमें से भाई रहीमबख्श आज भी माडर्न थियेटर्स लिमिटेड में मौजूद हैं। शेष तीनों रत्न दुनिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के नाटक से अपना अपना पार्ट पूरा करके सदा के लिए शान्ति-निकेतन में जा सोए। इन चारों ने मेरी प्रशंसा क्या की, मानो प्रेस लाइन से नाटक लाइन की तरफ इंजन का कांटा बदल दिया। वह गाना कम्पनी मालिक को भी सुनाया गया तो उन्होंने उसका पुरस्कार वह दिया जो उनके लिए साधारण और मेरे लिए असाधारण, अर्थात् उनके लिए अमूल्य (मूल्य रहित) और मेरे लिए बहुमूल्य था। आज्ञा दे दी कि जब जी चाहे खेल (नाटक) में आ जाया करो।''

इसके बाद बेताब जी रोज नाटक देखने के लिए जाने लगे और उनका पारसी शैली के नाटकों से परिचय हुआ। इसके बाद वे इन नाटक कम्पनियों से जुड़ गये और नाटक लेखन का कार्य करने लगे। उनका नाटक लेखन १९०५ में आरम्भ हुआ। पारसी नाटक कम्मनियों में तब तक खेले जाने वाले नाटक प्रायः अश्लील, वासनारंजित, फूहड़ तथा उर्दू फारसी के कठिन शब्दों से लदी भाषा वाले संवादों से युक्त होते थे। बेताब तथा उनके समकालीन पं० राधेश्याम बरेली वालों ने नाटक लेखन में धार्मिक, पौराणिक तथा भारत के इतिहास के गौरवपूर्ण प्रसंगों को नाटकों में समाविष्ट कर नाट्यलेखन तथा अभिनय में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया। स्वयं बेताब ने इस विषय में लिखा था– ''महाभारत नाटक २९ जनवरी १९१३ को स्वर्गीय सेठ कावस जी पालन जी खटाऊ की कम्पनी द्वारा संगम थियेटर दिल्ली में पहली बार खेला गया। जब यह नाटक रंगशाला में आया तो सत्य के गुप्त बल ने असत्य के प्रकटाडम्बर पर विजय प्राप्त की। मेरे नाटक से जो लोग अपने कुटुम्ब की स्त्रियों को नाटक दिखाना पाप समझते थे, वे बेधड़क ला-लाकर दिखाने लगे। देवियों ने तो इसका इतना आदर किया कि सेठ जी को विशेष रूप से केवल स्त्रियों के लिए ही प्रति सप्ताह एक नाटक करना पड़ता था, जिसमें पुरुष दाखिल नहीं हो सकते थे।'' (महाभारत नाटक की भूमिका)

बेताब द्वारा रामायण तथा महाभारत के कथानकों पर आधारित जो नाटक लिखे गये उनमें आर्यसमाज के सिद्धान्तों का परिपालन स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ, उनके रामायण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाटक को ही लें। इसके प्रथम अंक की प्रस्तावना इस प्रकार है–

"ईश्वरोपासना के पश्चात् सूत्रधार और पारिपार्श्विक इस विषय पर विचार करते हैं कि रावण को दस मुख और बीस भुजाओं वाला बनायें या एक मुख, दो भुजाओं वाला? इसी प्रकार हनुमान् जी को बन्दर बनायें या एक विद्वान् योद्धा? इन गम्भीरं प्रश्नों का उत्तर वाल्मीकीय रामायण के अनेक प्रमाणों से प्राप्त करके रावण को एक मुख और दो भुजाओं वाला और हनुमान् को एक गम्भीर पण्डित और महावीर योद्धा बनाना ही उचित समझ कर नाटक आरम्भ करते हैं।"

इस प्रकार रामायण के कथानक को पौराणिक अतिरंजना, चमत्कारों और अतिनाटकीयता से बचाने का प्रयास किया गया। प्रथम अंक के तीसरे दृश्य में राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न का वेदारम्भ संस्कार दिखाया गया है। वनवास प्रसंग में अछूत समझी जाने वाली भील जाति की शबरी के घर पर राम का भोजन ग्रहण करना तथा यहां गुण, कर्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था की चर्चा बेताब के आर्यसमाजी चिन्तन को ही प्रकट करती है।

बेताब ने महाभारत के आरम्भ में सूत्रधार तथा नट-नटी द्वारा जो सामूहिक ईश्वर-प्रार्थना कराई है उसमें परमात्मा के मुख्य नाम ओ३म् का ही स्तवन है। यह मंगलाचरण पद्य इस प्रकार है–

प्रथम ओ३म् करो उच्चार।
जो है आनन्दरूप, सत्, चित्, नित, निर्विकार।
विश्व सकल नाटक सम, जीव हैं सब नाट्यकार।
रूप कोऊ लेत नाहिं अलग रहत सूत्रधार।
परदे से परख लेकर सब क्रिया, धन देता सब को,
गिन गिन कर निस दिन कारबार देखभाल कर।
प्रथम ओ३म् करो उच्चार।।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

महाभारत में ही उन्होंने अपना वह प्रसिद्ध भजन लिखा जो निर्गुण, निर्विकार, अमूर्त परमात्मा का उल्लेख करता है तथा उसकी पूजा के लिए किसी भी प्रकार की भौतिक सामग्रीं को अनावश्यक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानता है। इस लोकप्रसिद्ध भजन का मूल पाठ इस प्रकार है–

अजब हैरान हूं भगवन् तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं।।
करूं किस भांति आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जां।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टी बजाऊं मैं।।
तुम्हीं हो मूरती में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान् पर भगवान् को क्यों कर चढ़ाऊं मैं।।
लगाना भोग कुछ तुम को यह इक अपमान करना है।
खिलाते विश्व को तुम हो उसे क्यों कर खिलाऊं मैं।।
तुम्हारी ज्योति से रोशन, हैं सूरज चांद औ तारे।
महा अंधेर है तुम को, अगर दीपक दिखाऊं मैं।।
भुजाएं हैं न सीना है, न गर्दन है न पेशानी।
तू है निर्लेप नारायण, कहां चन्दन लगाऊं मैं।।

'हमारी भूल' शीर्षक उनके एक अन्य नाटक का मंगलाचरण संस्कृत में है जिसमें ईश्वर को जगन्नाटक सूत्रधार के रूप में चित्रित किया गया है–

नमामि विश्वनाटिका-प्रधान-सूत्रधारिणम्।
जगत्करं जगद्भरं जगद्हरं सनातनम्।।

पुनः नाट्यशास्त्र के आचार्य भरत मुनि की वन्दना की गई है–

महामुनीन्द्र-नाट्यशास्त्रकार-पाद-पङ्कजम्।
नमाम्यहं भजाम्यहं शिवेतरोपशान्तये।।

बेताब द्वारा रचित नाटकों की संख्या २६ है। इनमें महाभारत (१९१३), रामायण (१९१५), कृष्ण-सुदामा (१९२०), शंख की शरारत (१९२०) आदि प्रमुख हैं। महाभारत उनका अत्यन्त लोकप्रिय नाटक था। इसमें उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों को यत्र तत्र प्रसंगोपात्त प्रस्तुत किया। श्रीकृष्ण के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने का प्रसंग तत्कालीन गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली से प्रभावित होकर लिखा गया है। इसी प्रकार इस नाटक में चेता चमार की एक अवान्तर कथा का समावेश कर शूद्रों के वेद पठनाधिकार का प्रतिपादन किया गया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। यहां चेता चमार अपने झण्डे पर **'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।'** (यजुर्वेद २६।२) मन्त्र को लिख कर मनुष्यमात्र को वेदाधिकारी घोषित करता है।

समाज नामक उनके एक अन्य नाटक में बेताब ने विधवा विवाह के समर्थन में अथर्ववेद (१८।३।२) के 'उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोके' इस मन्त्र को उपस्थित कर एक अच्छा खासा शास्त्रार्थ ही आयोजित कर दिया। यह सारा शास्त्रार्थ प्रसंग अत्यन्त मनोरंजक, उपदेशप्रद तथा नाटककार की सुधारवादी मनोवृत्ति का परिचायक है। सीता-वनवास नाटक में उन्होंने अश्वमेध यज्ञ-प्रसंग में सीता की स्वर्णमूर्ति की स्थापना का प्रश्न उपस्थित कर मूर्तिपूजा की अशास्त्रीयता प्रतिपादित की।

हिन्दी नाटकों के समीक्षकों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि पारसी थियेटर शैली के नाटकों में हिन्दी भाषा के विशुद्ध रूप को प्रतिपादित करने का श्रेय बेताब और राधेश्याम को ही है। बेताब ने महाभारत की प्रस्तावना में सूत्रंधार के मुख से जो कहलवाया वह उनकी भाषा नीति का उल्लेखनीय दस्तावेज है-

सूत्रधार-न ठेठ हिन्दी न खालिश उर्दू,जबान गोया मिली-जुली हो।
अलग रहे दूध से न मिश्री, डली डली दूध में घुली हो।।

इस तरह अत्यन्त क्लिष्ट संस्कृत शब्दों तथा फारसी शब्दों से बोझिल उर्दू से हट कर जिस सरल, सुबोध तथा प्रसादपूर्ण भाषा का प्रयोग बेताब ने अपने नाटकों में किया जिसके कारण ये नाट्य कृतियां पाठकों तथा दर्शकों में लोकप्रियता अर्जित कर सकीं।

महाभारत के संवाद अत्यन्त प्रभावशाली, भावों को उत्तेजना देने वाले तथा पात्रों के मनोभावों को अभिव्यक्ति देने वाले होते थे। तत्कालीन शैली के अनुसार उनमें गद्य के साथ-साथ प्रवाहपूर्ण तथा तीखे पद्यों का भी प्रयोग किया जाता था। कौरव सभा में वस्त्राकर्षण से खिन्न और त्रस्त द्रौपदी के इस उत्तेजक संवाद को सुनें-

द्रौपदी-हाय, यह सभा अंधी है या बहरी।
भरी है आज क्या तुम सब ने रुई अपने कानों में।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असुर के खौफ ने क्या ठोंक दी कीलें जबानों में।
लगाकर डाट बैठी है सभा मुंह के दहानों में।।
सभासद हैं कि सब मिट्टी के पुतले हैं दुकानों में।
निलज्जे क्षत्री के लाल हैं या कौन हैं सारे।
सती की देखते हैं दुर्गती और मौन हैं सारे।
आज क्या द्रोणाचार्य का धनुष गल गया?
क्या अश्वत्थामा के बाणों को तरकश निगल गया?
क्या कृपाचार्य की तलवार पर काई लग गई?
क्या भीष्म पितामह की जबान कट गई?

ऐसे ही आवेशपूर्ण तथा पात्रों की मन:स्थितियों के परिचायक संवादों के कारण इन नाटकों को लोकप्रियता मिलती थी। इन संवादों की प्रभावशाली अदायगी दर्शकों पर विचित्र प्रभाव छोड़ती थी। वे पात्रों के मनोभावों के साथ बहने लगते। करुणापूर्ण संवादों को सुनकर नेत्रों में आंसू भर लाते। तालियों की गड़गड़ाहट से सारी रंगशाला गूंज उठती और 'वन्स मोर' के शब्द वातावरण में भर जाते।

बेताब कवि के रूप में

एक सफल नाटककार होने के साथ-साथ पं० नारायणप्रसाद बेताब उच्चकोटि के कवि तथा काव्य-समीक्षक भी थे। उनकी काव्य-रचना हिन्दी तथा उर्दू दोनों शैलियों में मिलती हैं। उनकी कुछ ऐसी ही काव्यकृतियों का समीक्षण किया जाना आवश्यक है।

नारायण शतक—एक सौ दोहों का यह शतक नीति-विषयक कविता का श्रेष्ठ नमूना है। इसमें लोकव्यवहार, वैयक्तिक और सामाजिक आचरण आदि विषयों का निरूपण किया गया है। शतक का आरम्भ कवि ओंकार-महिमा से करता है—

ओम् उच्चारण होत ही टिके न विघ्न-विषाद।
स्यार भागते हैं यथा सुन केहरि को नाद।।

यत्र तत्र कवि ने संस्कृत सूक्तियों को दोहा रूप दिया है। यथा— **'न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षम्।'** (चाणक्यनीतिदर्पण ११।८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस चाणक्य की सूक्ति को कवि ने निम्न रूप में प्रस्तुत किया–

गुण जाने बिन गुणिन को होत नहीं सत्कार।
गजमुक्ता तज भिल्लनी धारत गुंजा हार।।

इस शतक के रचना-काल का उल्लेख कवि ने चित्रकाव्य शैली में इस प्रकार किया है–

प्राण द्वीप निधि मेदिनी विक्रम संवत् जान।
श्रावण शुक्ला द्वादशी भयो शतक अवसान।।

अङ्कानां वामतो गतिः के नियमानुसार काव्यलेखन काल प्राण (७) द्वीप (७) निधि (९) मेदिनी (१) अर्थात् १९७७ वि० की श्रावण शुक्ला १२ ज्ञात हुआ।

बेताब ने महर्षि दयानन्द के गुरु दण्डी विरजानन्द, स्वयं महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के महान् नेता स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन-प्रसंगों को लेकर उत्कृष्ट काव्य रचना की है। विरजानन्द की ज्योतिहीन आंखों को सम्बोधित करते हुए कवि ने 'आंखें' शीर्षक कविता लिखी। इसमें कवि की मनोज्ञ कल्पना देखने योग्य है–

पाई नहीं बला से, तुम ने असार आंखें।
पर दिव्य दृष्टि वाली थीं, निर्विकार आंखें।।
अंधे हैं हिये के, अंधा तुम्हें कहेंगे।
कुरबान इन गढ़ों पर, उनकी हजार आंखें।।
भारत की दुर्दशा को, देखा गया न उनसे।
पर्दे में इसलिए थीं, वो बेकरार आंखें।।
भारत की दुर्दशा को, देखा गया न तुम से।
आखिर बना के छोड़ीं, दो की हजार आंखें।।
लोगों के चर्म-चक्षु, किस तरह देख सकते।
थीं चक्षुहीन द्रष्टा, से नित्य चार आंखें।।
आंखों का बंद होना, था भेद से न खाली।
विषयों के दाखिले को, है मुख्य द्वार आंखें।।
पाये थे ज्ञानचक्षु अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी।
दो किस शुमार हैं, थीं बेशुमार आंखें।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दो खिड़कियों खुली हैं, चलते हुए मकां में।
बेताब की हों वैसी, दीवार वार आंखें।।

(डा० केशवदेव शास्त्री द्वारा सम्पादित मासिक आर्यकुमार के ऋषिबोधांक (माघ १९८० वि०) में प्रकाशित पृ० २१०)

बेताब ने ऋषि दयानन्द के विविध जीवन-प्रसंगों को लेकर उर्दू की मुसद्दस शैली में चार लघु काव्यों की रचना की। मुसद्दस उर्दू का एक छन्द है जिसमें छः पंक्तियां होती हैं। ये चारों मुसद्दस लाहौर से प्रकाशित होने वाले उर्दू पत्र प्रकाश (महाशय कृष्ण द्वारा सम्पादित) साप्ताहिक में छपे थे और विद्वानों की एक समिति ने इनके काव्य गुणों को परख कर कवि को पुरस्कृत भी किया था। कालान्तर में स्वयं बेताब ने ही इन्हें दयानन्द-दिग्दर्शन शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित किया था। नागरी लिपि में इन्हें प्रकाशित किये जाने पर काव्य में प्रयुक्त कतिपय कठिन शब्दों के अर्थ पाद-टिप्पणियों में स्वयं कवि ने दे दिये थे। फलतः हिन्दी पाठकों के लिए यह रोचक काव्य दुर्बोध नहीं रहा। छन्दविषयक नियमों के पालनार्थ इन मुसद्दसों में ऋषि, मुनि जैसे संस्कृत शब्दों को दीर्घ ईकारान्त (ऋषी, मुनी) तथा गुरु को दीर्घ ऊकारान्त कर देने की विवशता कवि ने अपनी प्रस्तावना में स्पष्ट की है। छंदों के नियमों के पालन में ऐसे परिवर्तन स्वीकार होते हैं।

प्रथम मुसद्दस का शीर्षक है **'बुतपरस्ती का शुक्रिया'** (मूर्तिपूजा को धन्यवाद)। इसकी रचना नवम्बर १९१२ में हुई थी। इस कविता में शिवरात्रि-प्रसंग तथा बालक मूलशंकर के बोधोदय को रोचक तथा विदग्धतापूर्ण शैली में वर्णित किया गया है। भाषा की सरलता तथा कलाम की साफगोई काबिले तारीफ है। यह निम्न उदाहरण से स्पष्ट है–

जो उपवास होता न शिवरात्रि का।
न होती जो मंदिर में शिवलिंग पूजा।।
न पूजा में फल फूल चढ़ता चढ़ावा।
निकलता न वह चाट खाने को चूहा।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया जिस ने साबित सरे लिंग चढ़ कर।
खुदा को खुदा और पत्थर को पत्थर।।

दूसरा मुसद्दस **'स्वामी का समावर्तन संस्कार'** शीर्षक है। यह अक्टूबर १९१३ में लिखा गया था। कवि ने इसमें दण्डी विरजानन्द की पाठशाला में अपनी शिक्षा समाप्त हो जाने के पश्चात् स्वामी दयानन्द द्वारा गुरुचरणों में कुछ लौंगें अर्पित करने के मार्मिक प्रसंग को चित्रित किया है। इस मुसद्दस की भाषा में संस्कृत के शब्दों का बाहुल्य है जो विषय की दृष्टि से उपयुक्त है। एक उदाहरण देखें–

ऋषि के नैन भर आये गुरु जी के वचन सुनकर।
समाया जब न दिल में आ गया वो प्रेम पलकों पर।।
बड़ी भक्ति से जोड़े हाथ चरणों में झुकाया सिर।
निवेदन किया फिर हे मान्यवर, हे पूज्य विद्याधर।।
अदा यह कर्ज सारी उम्र कर सकता नहीं हरगिज।
गुरु की देन है यह जो उतर सकती नहीं हरगिज।।

तीसरा काव्य **'ऋषि की जिन्दगी बख्श मौत'** अक्टूबर १९१६ में लिखा गया। इसमें कवि ने स्वामी दयानन्द के परलोकगमन का हृदयद्रावक तथा करुणाजनक चित्रण किया है। कवि स्वीकार करता है कि उसकी कविता में न तो किसी प्रकार का काव्य कौशल है और न कल्पना विलास। इसका छंदोविधान भी सर्वथा अपूर्व नहीं है। इस कविता की भाषा को क्या कहें–उर्दू या हिन्दी, इसमें भी उसे संकोच है। यदि उसे किसी बात का सन्तोष है तो बस इसी का कि उसने अपने आचार्य के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रकट करने के लिए ही इस काव्य की रचना की है–

सखुन बेताब का रंगे-सखुनगोई से खाली है।
न मजमूं आफरीनी है न कुछ नाजुक खयाली है।।
न किस्सा ही निराला है न बंदिश ही निराली है।
न उर्दू है न हिन्दी है जबां की पायमाली है।।
बस अब खामोश हो लिखने की शक्ति देख ली तेरी।
ऋषि-भक्ति का था इजहार भक्ति देख ली तेरी।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द-दर्शन में संगृहीत चौथा मुसद्दस **'शास्त्र और शस्त्र दोनों बस में हैं'** शीर्षक वाला है। इसमें बरौली (जिला बुलन्दशहर) के अहंकारी राव कर्णसिंह द्वारा स्वामी दयानन्द के प्रति प्रदर्शित उद्दण्डता तथा बदले में ऋषि द्वारा दिखाई गई उदारता तथा उसे क्षमा करने वाला मार्मिक प्रसंग वर्णित है। इस कविता का आरम्भ एक रुबाई से इस प्रकार होता है–

बढ़ता है जो क्रोध अक्ल घट जाती है।
फिर ज्ञान की काया ही पलट जाती है।।
शमशीरे गजब को है अजब ढाल क्षमा।
इस ढाल से तलवार भी कट जाती है।।

बेताब के ये मुसद्दस अत्यन्त लोकप्रिय हुए थे। इसका एक कारण था इनमें पाया जाने वाला हास्य, व्यंग्य और विनोद। कवि ने अपनी सहज शैली में धार्मिक अंधविश्वासों और पाखण्डपूर्ण क्रियाओं पर जो कटाक्ष किये, उनके कारण उस युग के पाठकों ने इन्हें रुचिपूर्वक पढ़ा था। मृतकों के किये जाने वाले श्राद्ध पर तीखा कटाक्ष करते हुए कवि ने बताया कि यह विचार सर्वथा मिथ्या ही है कि श्राद्ध कर्म से दिवंगत पितरों की तृप्ति होती है।

'बुतपरस्ती का शुक्रिया' शीर्षक मुसद्दस की निम्न पंक्तियां द्रष्टव्य हैं–

यहां तक थे हम होशियारे जमाना।
कि भिजवाते रहते थे मुर्दों को खाना।।
बड़े पेट थे या बड़ा डाकखाना।
किये पार्सल अक्सर उनसे रवाना।।
जरा देखिये डाकियों का कलेजा।
जमीं का पुलिन्दा फलक पर भी भेजा।।
रसीद आज तक भी किसी की न आई।
वह शय पाने वालों ने पाई न पाई।।
बहुत खो चुके जब कि अपनी कमाई।
ऋषि ने बताया कि है यह ठगाई।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया पार्सल यह तसल्ली है झूटी।
लुटेरों ने यह डाक रस्ते में लूटी।।

बेताब के चारों मुसद्दस हिन्दी-उर्दू की मिली-जुली शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

पिस्तौल का पश्चात्ताप

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान से उद्वेलित होकर बेताब ने 'पिस्तौल का पश्चात्ताप' शीर्षक एक लम्बी कविता लिखी। इसकी भाषा तो उर्दू ही है किन्तु विषय के महत्त्व तथा भाषा की रवानगी से प्रभावित होकर कलकत्ता के प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक 'मतवाला' ने इसे १ जनवरी १९२७ के अंक में संक्षिप्त रूप से प्रकाशित किया था। जिस पिस्तौल से स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या की गई वह हत्यारे के इस पाशविक, बर्बर कृत्य की निंदा करते हुए कहती है–

करेगा कौन ऐसी बुजदिली दगाबाजी।
अरे कम्बख्त तू तो हीजड़ों से ले गया बाजी।।

कवि ने उसी पिस्तौल के मनोभाव को इन शब्दों में व्यक्त किया है–

तुझे मालूम है उस वक्त क्या पिस्तौल कहती थी।
अरे शैतान तेरे मुंह पे वो लाहौल कहती थी।।
उसे अफसोस था मैं पंजये नापाक में आई।
मुकामे शर्म है छुप कर मैं जिस पोशाक में आई।।
चला करती हूं मैं मूंजी-शरीरों के शरीरों पर।
अधर्मी ने चलाया हाथ पीरों पर फकीरों पर।।

निश्चय ही बेताब की यह कविता विषय और अभिव्यक्ति दोनों दृष्टि से एक अनुपम रचना है।

बेताब–काव्य समीक्षक के रूप में

पं० नारायणप्रसाद बेताब श्रेष्ठ कवि तथा नाटककार तो थे ही, उन्हें कविता की परख भी थी। वे काव्य के तत्त्वों के परीक्षक तथा समीक्षक भी थे। उन्होंने काव्य रचना करने वालों के मार्ग-दर्शन के लिए कवि-शिक्षा के अनेक ग्रन्थ लिखे थे। अलंकार तथा छन्दः-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शास्त्र की उन्हें प्रामाणिक जानकारी थी। इस प्रकार वे कवि तथा आचार्य दोनों ही थे। काव्य, विवेचना-विषयक उनके निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हुए थे-

प्रास-पुञ्ज-तुकान्त कविता लिखने वालों के लिए समस्यापूर्ति करने का कौशल एक अनिवार्य शर्त है। १९२० में प्रकाशित इस ग्रन्थ में इसी विषय से सम्बन्ध रखने वाली उपयोगी जानकारी और सुझाव दिये गये हैं।

पद्य-परीक्षा-अयोध्यासिंह उपाध्याय, रामचरित उपाध्याय, श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, नाथूराम शंकर शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मिश्रबंधु, लाला भगवानदीन, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही (त्रिशूल) तथा पं० रूपनारायण पाण्डेय जैसे द्विवेदी काल के कवियों के छंदोविधान की पिंगल शास्त्र के आधार पर बेलाग समालोचना की गई है।

पिंगल-सार-१९२० में बेताब ने पिंगल पाठावली नाम से एक मासिक पत्र निकाला था। उसे ही पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया। इसमें हिन्दी छंद:शास्त्र के साथ-साथ उर्दू अरज को भी प्रस्तुत किया गया है।

बेताब रचित सैद्धान्तिक ग्रन्थ

पं० नारायणप्रसाद बेताव दृढ़ आर्यसमाजी थे। उन्होंने वेद प्रतिपादित सिद्धान्तों का तलस्पर्शी अध्ययन किया था। यद्यपि उनका मुख्य क्षेत्र कविता तथा नाटक था किन्तु उन्होंने कुछ ग्रन्थ ऐसे भी लिखे हैं जो आर्यसमाज के सिद्धान्तों से सम्वन्धित हैं। इनमें निम्न उल्लेखनीय हैं-

संस्कार-संगीत-स्वामी दयानन्द रचित संस्कारविधि में जिन १६ संस्कारों का विधान है उनसे सम्बन्धित गाये जाने योग्य गीतों का संग्रह।

राधा-कृष्ण का नाता-ब्रह्मवैवर्तपुराण के आधार पर राधा (रायाण वैश्य की पत्नी थी) और कृष्ण के सम्बन्ध की विवेचना करते हुए सिद्ध किया गया है कि राधा कृष्ण के मामा रायाण गोप की विवाहिता पत्नी थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमृताञ्जलि–पञ्चयज्ञों की विधि तथा मन्त्रों के अर्थ। पञ्चमहायज्ञ विषयक शंकाओं का समाधान तथा भजन।

करिश्म-ए-नजूम–(उर्दू में छपी) फलित ज्योतिष तथा जन्मपत्र का खण्डन।

बेताब के अनुपलब्ध अथवा अप्रकाशित ग्रन्थ–

(१) दर्शन दिग्दर्शन (२) शास्त्रार्थ शब्द कोश–इस्लाम और आर्यसमाज के बीच होने वाले शास्त्रार्थों में अरबी, फारसी तथा संस्कृत के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता था। ऐसे लगभग ४०० शब्दों के अर्थ देने वाले इस कोश की भूमिका पं० रामचन्द्र देहलवी ने लिखी थी। बेताब ने मम्मट कृत काव्यप्रकाश तथा भर्तृहरि के तीनों शतकों का भी अनुवाद किया था, जो अनुपलब्ध हैं।

१९२१ में बेताब दिल्ली आये और चाह रहट नामक स्थान में बेताब प्रिंटिंग वर्क्स नामक एक मुद्रणालय स्थापित किया। प्रेस कार्य का उन्हें अनुभव भी था। यहां से उन्होंने अपने अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किये। आर्यसमाज के विभिन्न पत्रों में उनकी कविताएं प्रकाशित होती थीं। उन दिनों आर्यकुमार आन्दोलन अपने यौवन पर था। दिल्ली के डा० युद्धवीरसिंह ने बेताब की प्रेरणा से आर्यकुमार नामक एक मासिक पत्र १९२३ में निकाला। इसमें बेताब की कलाकृतियां प्रायः छपती थीं। शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी तथा प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन (बद्रीनाथ वर्मा) से उनका सौहार्द भाव था। देहलवी जी ने उनके बारे में अपने प्रशंसापूर्ण उद्‌गार प्रकट करते हुए लिखा था–"मेरे जीवन में एक बड़ा पुरसुकून मौका तब आया जब पं० नारायणप्रसाद बेताब से मेरा परिचय हुआ। पण्डित जी अच्छे दोस्त तथा ऊंचे दर्जे के शायर थे। कविताएं बनाना उनके बायें हाथ का खेल था। मेरा सौभाग्य था जो वे मेरे व्याख्यानों और मुबाहसों को सराहते थे। उन्हें शास्त्रार्थ सुनने का इतना शौक था कि अनेक स्थानों पर मेरे साथ इसीलिए जाते थे। शास्त्रार्थों में उनका साथ मेरे लिए उत्साह और उमंग वृद्धि का साधन सिद्ध हुआ था। मुझे आशा है उनको अगला जन्म बड़े ऊंचे दर्जे का प्राप्त हुआ होगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयाग विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के विगत अध्यक्ष तथा संयुक्तप्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की आर्य प्रतिनिधि सभा के किसी समय प्रधान रहे डा० बाबूराम सक्सेना ने सरस्वती (जून १९१७) में बेताब जी की एक पुस्तक की समालोचना करते हुए लिखा था–"दुर्भाग्य से मुझे उनका साक्षात्कार नहीं हुआ है। पर फोटो से बेताब जी एक गम्भीर पछांही (पश्चिमी उत्तर प्रदेश के) आर्यसमाजी मालूम पड़ते हैं।" डा० सक्सेना का यह कथन सत्य ही था क्योंकि बेताब का मूल निवास तो जिला बुलन्दशहर ही था और केवल शक्ल से ही नहीं, अपने सम्पूर्ण लेखन से वे आर्यसमाज तथा उसके प्रवर्त्तक के मन्तव्यों के समर्थ व्याख्याता थे। बेताब का निधन १५ सितम्बर १९४५ को मुम्बई में हुआ।

सहायक ग्रन्थ–

पारसी हिन्दी रंगमंच : डा० लक्ष्मीनारायणलाल।
दयानन्द दिग्दर्शन: बेताब प्रिंटिंग वर्क्स द्वारा प्रकाशित।
पं० नारायणप्रसाद बेताब (शोध ग्रन्थ) : डा० विद्यावती नम्र मतवाला की १९२७ की फाइल।

❑❑❑

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसद्दस १

जो नवम्बर सन् १९१२ ई० में लिखा गया

बुतपरस्ती[१] का शुक्रिया[२]

१

बुरा हाल तेरा है अय बुतपरस्ती!
कि मिलने को है खाक[३] में तेरी हस्ती[४]।
बुलन्दी[५] से रुख[६] हो गया सूए[७] पस्ती[८],
नहूसत[९] है गो तेरे मुंह पर बरस्ती।।
नहीं काबिले कद्र फर्मान तेरा।
मगर मानता हूं मैं अहसान तेरा।।

२

बहुत दिन से अहकाम[१०] तेरे हैं रद्दी,
न कब्जे में बाकी है जागीर जद्दी[११]।
तहत्तुक[१२] ने कर दी तेरी शान भद्दी,
गया हाथ से राज और राज-गद्दी।।
न सच्ची थी तौकीर[१३] रहती वह कब तक।
यह शहना जो उतरा हुआ नाम मरदक[१४]।।

---

१. मूर्तिपूजा, २. धन्यवाद, ३. राख, ४. अस्तित्व. ५. ऊंचाई, ६.मुख, ७. तरफ. ८. नीचाई, ९. मनहूस, १०. बहुत से आदेश, ११. बाप-दादा की (दादालाई) १२. परस्पर की निन्दा, १३. सम्मान, १४. घटिया (दुष्ट) मनुष्य ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३

कहां है वह अब रौबे[१]-फर्मागुजारी[२],
कि महकूम[३] भारत की भूमी थी सारी।
बस अब रह गयी इतनी जागीरदारी,
कहीं एक खेत और कहीं एक क्यारी।।

निशाने परस्तिश[४] फकत इस कदर है।
सफैदी सी कुछ दानए-माश पर है।।

४

मुसाफिर के रस्ते में एक खार थी तू,
इबादत[५] की गर्दन पे तलवार थी तू।
हमेशा नकाबे-रुखे-यार[६] थी तू,
तो दर्शन में पर्दे की दीवार थी तू।।

तेरे लाख ऐबों से अब दूर हूं मैं।
फकत एक खूबी का मशकूर[७] हूं मैं।।

५

सुन अय बुतपरस्ती ! अगर तू न होती,
तो मिलता न हम को वह अनमोल मोती[क]।
चमक जिसकी थी जैसे सूरज की ज्योती,
न यूं मादरे-शिर्क[८] भी जान खोती।।

शिवालय में जाता न फिर मूल शङ्कर[ख]।
ठहरते न यूं संगे-माजूल[९] शङ्कर।।

क–महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती
ख– ,, ,, ,, का पहला नाम

१. प्रभाव, २. आदेशपालन, ३. परतन्त्र (गुलाम), ४,५. पूजा, ६. प्रेमिका के मुख पर नकाब (बुर्का), ७. शुक्र गुजार, ८. एक प्रभु को न मानने रूप बुरे कर्म की माँ, ९. पत्थर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

६

जो उपवास होता न शिवरात्री का,
न होती जो मन्दिर में शिवलिङ्ग पूजा।
न पूजा में फल फूल चढ़ता चढ़ावा,
निकलता न वह चाट चखने को चूहा।।

किया जिसने साबित[1] सरे लिङ्ग चढ़कर।
खुदा को खुदा और पत्थर को पत्थर।।

७

किया उसने झूठा चढ़ावा वह सारा,
दिया ताव मूंछों पे और यह पुकारा।
करे तो कोई बाल बांका हमारा,
महादेव सुनते रहे दम न मारा।।

यकीं था मगर मूल शङ्कर के दिल में।
कि जिन्दा न जायेगा चूहा यह बिल में।।

८

अभी लेके तिरशूल निकलेंगे शङ्कर,
फटा चाहती है यह पिण्डी मुकर्रर[2]।
जटा-गङ्गधारी पिशाचों के अफ़सर,
इसे आज रख देंगे निश्चय कुचलकर।।

सजा देंगे गुस्ताख[3] को बात क्या है।
यह चूहा है चूहे की औकात[4] क्या है।।

---

१. प्रमाणित, २. नियत (स्थापित), ३. अपराधी, ४. सामर्थ्य ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

९

मगर देर तक जबकि निकला न कोई,
महादेव ने कुछ न की चारा जोई[१]।
खमोशी[२] ने अफसोस[३] सब बात खोई,
कसीदे[४] सरासर हुए यावा-गोई[५]।।

उठी मूलशङ्कर के दिल में यह शङ्का।
बनी कैसे मिट्टी यह सोने की लङ्का।।

१०

जो है भूः भुवः स्वः तपः नाम वाला,
"तपः" शब्द का भी निकाला दिवाला।
गजब है कि यूं कान में तेल डाला,
कहां खो दिया दण्ड देने का आला।।

मन्हादेव पर पड़ गयी ओस क्यूं कर।
ये बुत बन के बैठे हैं अफसोस क्यूं कर।।

११

डरा एक चूहा भी जिससे न घर में,
बिठायेगा क्या रौब वह विश्व भर में।
मैं सुनता था शक्ती महा ईश्वर में,
मगर शून्य है यह तो मेरी नजर में।।

फकत[६] एक पत्थर तराशा[७] हुआ है।
जो अज्ञानियों को तमाशा हुआ है।।

१. हल निकाला, २. शान्ति, ३. खेद, ४. स्तुति, ५. इधर-उधर की कहना, ६. केवल, ७. काटा हुआ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२

महादेव देवों में भी जो महा है,
यह हर्गिज नहीं है कोई दूसरा है।
कोई उसपे गालिब[१] हो ताकत ही क्या है,
जो परमात्मा है वह सब से बड़ा है।।

वह क्या एक चूहे से मगलूब[२] होता।
उसी को जो मैं पूजता खूब होता।।

१३

मुबारक[३] हुआ इन खियालों[४] का आना,
मुबारक वह शब[५] थी मुबारक जमाना।
मुबारक हुआ वह चढ़ावा चढ़ाना,
मुबारक हुआ उस को चूहे का खाना।।

हुआ मुर्ग[६] दिल जो नवासंजे[७] वहदत[८]।
खुला उस घड़ी से दरे[९] गंजे[१०] वहदत।।

१४

तबीअत[११] वहीं मूलशङ्कर की बदली,
मिटे कुफ्र[१२] बस दिल से यह शर्त बद ली।
कुल्हाड़ी पये[१३] नख्ले[१४] अतवारे बद ली,
हुई सर बसर[१५] शिर्क की दूर बदली।।

जो सूरज ने सूरत निकाली घटा से।
बढ़ा मेहरे[१६]-तौहीद[१७] काली घटा से।।

---

१. हावी होना, २. विचलित, ३. शुभ, ४. विचारों, ५. रात, ६. प्रशंसक, ७. प्रभु (खुदा), ८. एक (अकेला), ९. दरवाजा, १०.खजाना, ११. मन, १२. नास्तिकता, १३. वास्ते (के लिए), १४. फल, १५. स्पष्ट(खुल्लमखुल्ला), १६. सूरज, १७. एक प्रभु।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१५

पड़ा था जो यह कोयलों का जखीरा[१],
निकल आया उस में से अनमोल हीरा।
समय ने पहाड़ों के टुकड़ों को चीरा,
तो हाथ आ गया बेशकीमत[२] मुमीरा[३]।।

मिला हम को जुल्मात[४] से आबे हैवां[५]।
मिला उसकी हर बात से आबे हैवां।।

१६

न मंजूर[६] की जब बुतों की गुलामी,
रही फिर न कुछ मूलशङ्कर में खामी[७]।
बने वो महर्षी (र्षि) दयानन्द स्वामी,
तरफदार[८] हक[९] के सिदाकत[१०] के हामी[११]।।

किया चश्मए[१२] फैज[१३] जारी जिन्होंने।
मुसीबत में सुन ली हमारी जिन्होंने।।

१७

नये सिरे से भारत में हलचल मचा दी,
अविद्या की विद्या ने हस्ती मिटा दी।
जहां सामने आये वादी विवादी,
वहीं मुंह पे मुहरे-खमोशी लगा दी।।

गजब धाक बैठी सरे अनजुमन[१४] थी।
न कुछ मुशरिकों[१५] को मजाले[१६] सखुन[१७] थी।।

---

१. भण्डार, २. कीमती, ३. सुर्मे में पड़ने वाला औषध, ४. यातनाएं, ५. अमृ त, ६. स्वीकार, ७. कमी, ८. पक्षपाती, ९. सत्य, १०. सच्चाई, ११. मानने वाले, १२. स्रोत, १३. लाभकारी, १४. सभा, १५. प्रतीकोपासक(किसी को ईश्वर मानकर पूजनेवाला) १६. हिम्मत, १७. बोलना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१८

जो गिरते थे उन को ऋषी ने संभाला,
पड़े थे जो गारों[१] में उन को निकाला।
"यथेमां वाचम्" का दे कर हवाला,
किया शूद्रों को भी अदना[२] से आला[३]।।

मसावात[४] का हक दिया मर्दो जन[५] को।
निकम्मा न समझा किसी अज्वे[६] तन को।।

१९

मजाहिब[७] हैं जितने भी हिन्दोस्तां में,
पड़े बेखबर थे ये खाबे[८] गरां[९] में।
मगर थां यह जादू ऋषी के बयां में,
खड़े हो गये कान सब के जहां में।।

उड़ी भाप से जब कि हांडी की चपनी[१०]।
तो हर एक को पड़ गयी अपनी अपनी।।

२०

लगे कहने तौहीद[११] के थे जो दुश्मन,
करो वेद से बुतपरस्ती का खण्डन।
किया "तस्य प्रतिमा न अस्ति" का वर्णन,
किसी को रही फिर न कुछ ताबे[१२] गुफतन[१३]।।

खिजालत[१४] से सर दर गरीबां[१५] थे सारे।
न आंखें मिलाते थे गैरत[१६] के मारे।।

---

१. गढ़ों, २. निम्न, मामूली, ३. श्रेष्ठ, ४. बराबरी, ५. पुरुष स्त्री, ६. भाग (हिस्सा), ७. मत-मतान्तर, ८. नींद, ९. गहरी, १०. ढकना, ११ एक ईश्वर, १२. ताकत, १३. बातचीत, १४. शर्मिन्दगी, १५. गरीबों के द्वार, १६. अपने किये की लज्जा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२१

बिलखती[1] थीं आफतजदा[2] बाल विधवा,
न था दर्दे खामोश[3] का कोई चारा।
सितम[4] है सितम उम्र भर का रंडापा[5],
न हो तो कहां तक न हो "भ्रूण हत्या"।।

न मां कोई बन सकती थी मारे डर के।
कि जंगल में फिंकते थे टुकड़े जिगर के।।

२२

वह औलाद[6] थी या कि जंजाल जी का,
नदामत[7] से चेहरे का था रंग फीका।
जिन आंखों में पिनहां[8] था रोना किसी का,
उन आंखों पे पहुंचा है दामन[9] ऋषी का।।

दुआगो[10] है अब गम फरामोश[11] बेवा[12]।
बची सौ गुनाहों से निर्दोष बेवा।।

२३

किया तय अहम से अहम मरहलों[13] को,
सिखाया यह बेताब से पागलों को।
न बचपन की शादी है जेबा[14] भलों को,
निचोड़ो कुचलकर न कच्चे फलों को।।

जो है बीज कच्चा उगेगा न पौदा।
यह सौदा है पूरे खिसारे[15] का सौदा।।

---

१. रोती, २. मुसीबत की मारी, ३. छुपी पीड़ा, ४. अंधेर, कहर, ५. वैधव्य, ६. सन्तान, ७. अपने किये की लज्जा, ८. छिपा हुआ, ९. कुर्ते का पल्ला, १०. दुआ देने वाली, ११. दुःख को भुला देने वाली, १२. विधवा, १३. समस्याओं, १४. योग्य, १५. घाटे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२४

हुई थी **यह** एक वहशते[१] खाम[२] हम को,
सबब[३] क्या कि हो खौफे[४] अंजाम[५] हम को।
बिरहमन समझते हैं जब आम[६] हम को,
तो फिर नेक कर्मों से क्या काम हम को।।

बड़ा नाज[७] था बाप दादा के कुल पर।
जमाना है गिर्दाब[८] में हम हैं पुल[९] पर।।

२५

मगर यह दयानन्द ने भेद खोला,
नहीं जन्म से कुछ बिरहमन का चोला।
सखुन[१०] यह है वेदों के कांटे में तोला,
अमल[११] से है छोटा बड़ा या मंझोला।।

जनेऊ बवक्ते[१२] विलादत[१३] कहां था।
न बच्चों में कुछ शूद्रता का निशां था।।

२६

यहां तक थे हम होशयारे जमाना,
कि भिजवाते रहते थे मुर्दों को खाना।
बड़े पेट थे या बड़ा डाकखाना,
किये पार्सल अक्सर उन से रवाना।।

जरा देखिये डाकियों का कलेजा।
जमीं का पुलन्दा[१४] फलक[१५] पर भी भेजा।।

---

१. पागलपन, २. अधूरा,कच्चा, ३. कारण, ४. डर, ५. अन्त, ६. साधारण, ७. स्वाभिमान, ८. भंवर, ९. सेतु, १०. बोल, कथन, ११. आचरण, कर्तव्य, १२. समय, १३. पैदायश, १४. ढेर, १५. आकाश ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२७

रसीद आज तक भी किसी की न आई,
वह शय[१] पाने वालों ने पाई न पाई।
बहुत खो चुके जब कि अपनी कमाई,
ऋषी ने बताया कि है यह ठगाई।।

गया पार्सल यह तसल्ली है झूटी।
लुटेरों ने वह डाक रस्ते में लूटी।।

२८

न था खौफ[२] हम को गुनह[३] के अमल[४] में,
समझते थे यह मैल सा है बगल में।
लगा लेंगे गोता जो गंगा के जल में,
तो हो जाएंगे दूर सब पाप पल में।।

ऋषी ने कहा वक्तो जर[५] यों न खोना।
कि मुमकिन[६] नहीं जीव को जल से धोना।।

२९

हजारों किये ऐसे उपदेश हम को,
सताये न जिस से कोई क्लेश हम को।
नयी जिन्दगी दी कमो-बेश[७] हम को,
कहा यह बना कर निकोकेश[८] हम को।।

निराकार निर्लेप परमात्मा है।
खुदा को मुजस्सम[९] समझना खता[१०] है।।

---

१. वस्तु पदार्थ, २. डर, ३. अपराध, ४. आचरण, ५. समय रूप धन, ६. संभव, ७. घट-बढ़, ८. भला, समझदार, ९. शरीरधारी, १० अपराध।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३०

बनाएं जो तस्वीर बे[१] सूद है वह,
यह महदूद[२], और गैर महदूद है वह।
कहे बुत को बेताब माबूद[३] है वह,
तो काफिर[४] है मुशरिक[५] है मरदूद[६] है वह।।

जो मूरत बनायी हुई है हमारी।
उसे कब सजावार[७] है किर्दगारी[८]।।

३१

न बेताब था बुतपरस्ती पे माइल[९],
न थीं बात मशकूर[१०] होने के काबिल[११]।
मगर इक अदा[१२] पर फिदा[१३] हो गया दिल,
हुआ जिस से मिन्नत[१४] कशे रम्जे[१५]-बातिल[१६]।।

मुनासिब[१७] न था आज खामोश[१८] होना।
बुराई है अहसां[१९]-फरामोश[२०] होना।।

इत्योम्

१. विना, रहित, २. दायरे वाला, ३. पूजनीय प्रभु, ४. नास्तिक, ५. प्रतीकोपासक, ६. घृणा के योग्य, ७. लायक, ८. असंभव को संभव करने वाला, ९. अच्छा समझकर चले, १०. अदा करने योग्य, ११. योग्य, लायक, १२. भाव भंगी, हाव भाव, १३. समर्पित, वार देना, १४. अहसान मन्द, १५. भेद, १६. झूठ (प्रभु के बीच) १७. सही, ठीक, १८. चुप होना, १९. कमी को पूरा करना, २०. न मानने वाला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसद्दस २

जो अक्तूबर १६१३ ई० में लिखा गया

स्वामी का समावर्त्तन* संस्कार

रुबाई

इनआम[1] की लौ[2] है न सिले[3] की पर्वा,
तहसीं[4] की तलब[5] न फैसिले[क] की पर्वा।
पर्वा नहीं अपनी लगजिशों[6] की बेताब,
लेकिन है जमीर[7] के गिले[8] की पर्वा।।
(बेताब)

१

बरसने को तो बादल रोज मौसिम में बरसते हैं,
करें क्या उन को लेकर, लाख वो कीमत में ससते हैं।
समन्दर के वो सन्तोषी कि जो सीपों में बसते हैं,
फकत[9] एक कतरए[10]-बारोने[11]-नेसा[12] का तरसते हैं।।
भरन[13] पड़ती है लेकिन काम की एक बूंद होती है।
उसे कहता है पानी कौन वह अनमोल मोती है।।

* पढ़ाई की समाप्ति पर होने वाला दीक्षान्त संस्कार।

क- प्रकाश लाहौर के ऋषि अंक में छपने वाली नज्मों[14] का इनआमी फैसिला एक सखुन फहम (काव्यमर्मज्ञ) कमेटी किया करती थी उसी की तरफ इशारा है।

---

१. पुरस्कार, २. लगन, ३. बदला, ४. प्रशंसा, ५. चाह, ६. बहकना(अनजाने में), ७. मन, ८. शिकायत, ६. केवल, १०. बूंद, ११. वर्षा, १२. जोरदार (मूसलाधार), १३. भराव, १४. कविता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२

अगर बेफैज[1] हैं तो कुछ नहीं हस्ती[2] हजारों की,
अंधेरा खो नहीं सकती चमक सदहा[3] सितारों[4] की।
शबे[5]-तारीक[6] में बन आई है चोरों की जारों की,
नजर है एक सूरज की तरफ भगवत के प्यारों की।।

अगर दर्शन ही काफी हो तो इक मेले का मेला है।
बनेगा काम जिस से वह हजारों में अकेला है।।

३

हजारों मद्रसे कायम हैं जाती और सरकारी,
हजारों पाठशालाएं भी हैं इस देश में जारी।
हजारों कर रहे होंगे समावर्त्तन की तैयारी,
हजारों का समावर्त्तन हुआ होगा बड़ा भारी।।

हजारों रोजमर्रा[7] फारिगुत्तहसील[8] होते हैं।
मगर कितने हैं वो जो राह के कन्दील[9] होते हैं?।।

४

पराये वास्ते[10] की जिन्दगी कुर्बान[11] किस किस ने?
हुआ है कौन रक्खा हो कदम[12] इस राह[13] में जिसने?
कोई साबित[14] कदम देखा भी है अर्वाबे-मजलिस[15] ने?
हटा आगे से पीछे जब सताया रत्बो याबिस[16] ने।।

नजर[17] आया नहीं ऐसा कोई पुतला[18] सतोगुन का।
अलापा[19] राग जिसने एक परउपकार की धुन का।।

---

१. लाभ रहित, २. अस्तित्व, ३. सैकड़ों, ४. तारों, ५. रात, ६. अंधेरी, ७. प्रतिदिन, ८. अन्तिम पढ़ाई की परीक्षा, ९. रोशनी का घर, १०. के लिए, ११. बलिदान, १२. पग, १३. मार्ग, रास्ता, १४. पूरा, १५. सारे सदस्य सभा के, १६. प्यास, १७. दिखाई, १८. मूर्ति, १९. गाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५

जो फरमाया[१] है गीता ने यहां इजहार[२] होता है,
कि ग्लानी धर्म की होती है जब अवतार होता है।
गुनाहों[३] का जमाना, पाप-मय संसार होता है,
तो ठोकर से महा-पुरुषों की बेड़ा पार होता है।।

अयां[४] उस वक्त कोई हस्तिये-पुरनूर[५] होती है।
तो पापों की सियाही नूर[६] से काफूर[७] होती है।।

६

इसी कानून[८] से इक मुक्त जीव इस लोक में आया,
मुबारक[९] जन्म जिस ने मोरवी के राज में पाया।
खुली तकदीर[१०] मथुरा की पड़ा चरनों का जब साया[११],
यहां आकर वो विरजानन्द जी का शिष्य कहलाया।।

दयानन्द अपने दम से एक था, विद्यार्थी सारे।
वो थे इस तरह जैसे चन्द्रमा के सामने तारे।।

७

गुरू जी भी तो विद्या-दान को तइयार बैठे थे,
बहुत दिन से लिये इक ज्ञान का भण्डार बैठे थे।
न थे वो बैठने के दिन मगर लाचार बैठे थे,
किसी के मुन्तजिर[१२] ही मखजने[१३]-इसरार[१४] बैठे थे।।

टटोला करते थे अक्सर जिसे वह पा गयी लाठी।
चलो अन्धे के हाथों में कहीं से आ गयी लाठी।।

---

१. कहा है, २. प्रकट करना, ३. अपराधों, ४. दिखाई देना, ५. रोशनी से भरी, ६. रोशनी, ७. कपूर के समान उड़ जाना, ८. नियम विधि-विधान, ९. शुभ धन्य, १०. भाग्य, ११. परछाई, १२. इन्तजार में (प्रतीक्षक) १३. उद् भव (निकलने का स्थान), १४. भद्र ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८

निकाला बल, चढ़ाकर आग पर आहिस्ता आहिस्ता[१],
पिलाया तेल अन्दर तक मगर आहिस्ता आहिस्ता।
उधर मोड़ा उसे चाहा जिधर आहिस्ता आहिस्ता,
हुई मतलब की फिर तो सरबसर[२] आहिस्ता आहिस्ता।।

किया मजबूत उसको कस कसा कर चन्द तारों से।
बहुत कुछ बढ़ गयी ताकत जो बांधे बन्द तारों से।।

६

पढ़ाया फलसफा[३], मन्तिक[४], मसाहत[५], इल्मे-उकलेदस[६],
बताया यह कि पत्थर क्या है, और क्या चीज है पारस।
सिखाये वेद चारों और छओं दर्शन ये पूरे दस,
हुआ हर तरह इतमीनान[७] तो बोले कि बेटा बस।।

समावर्त्तन की तइयारी करो आईं सकल विद्या।
समय है अब हमारी और तुम्हारी हो सफल विद्या।।

१०

दया परमात्मा ने की हुई आसां[८] मेरी मुश्किल[९],
कि जो कुछ फर्ज[१०] था उस से सुबुकदोशी[११] हुई हासिल[१२]।
मुबारक ब्रह्मचारी को कि पूरी हो गयी मंजिल[१३],
अब अपना फर्ज पहचानो कि हो सन्तुष्ट मेरा दिल।।

मेरे जीवन से था दुन्या[१४] में क्या आनन्द आंखों को।
यही दिन देखना मंजूर[१५] था इन बन्द आंखों को।।

---

१. धीरे-धीरे, २. आमने-सामने, ३. दर्शनशास्त्र, ४. न्यायदर्शन, ५. वैशेषिकदर्शन, ६. व्याकरण, ७. तसल्ली, ८. सरल, ६. कठिनाई, १०. कर्तव्य, ११. कन्धों का वोझ हल्का होना, १२. प्राप्त, १३. लक्ष्य, १४. संसार, १५. स्वीकार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११

समावर्त्तन की जो कुछ रस्म[1] है,वह अब अदा[2] कर दो,
हमारा कर्ज[3] दो, वह खाह[4] तकलीफें[5] उठा कर दो।
जो देना है तो दिल[6] के साथ हिम्मत को बढ़ाकर दो,
जमाना[7] जान ले इस तरह दुन्या[8] को दिखाकर दो।।

हमारे पास जो कुछ था, दिया, अब और क्या देंगे।
हमें गुरु-दक्षिणा दोगे तो हम तुम को दुआ[9] देंगे।।

१२

ऋषी के नैन भर आये गुरू जी के वचन सुन कर,
समाया जब न दिल में, आ गया वो प्रेम पलकों पर।
बड़ी भक्ती से जोड़े हाथ चरनों में झुकाया सर,
निवेदन फिर किया हे मान्यवर! हे पूज्य विद्याधर।।

अदा यह कर्ज सारी उम्र[10] कर सकता नहीं हरगिज।
गुरू का दैन वह है जो उतर सकता नहीं हरगिज।।

१३

अगर संसार की दौलत को अपने हाथ में लाऊं,
अगर मैं धनपती का धन किसी तदवीर[11] से पाऊं।
जमाने के जवाहर मांग कर भिक्षा में ले आऊं,
मेरे यह वस्त्र भी बिक जाएं और फिर मैं भी बिक जाऊं।।

समर्पण[12] सब करूं तो भी न हो गुरु-दक्षिणा पूरी।
वही बाकी[13] रहेगी जो कि है इस वक्त मजबूरी[14]।।

---

१. रीति-रिवाज, २. दे दो, चुका दो, ३. ऋण ४. चाहे, ५. मुसीबतें, ६. हृदय, ७. संसार, ८. जगत् , ९. किसी के लिए ईश्वर से मांग कर देना (आशीर्वाद), १०. आयु, ११. उपाय, १२. भेंट करना, १३. शेष, १४. बेबसी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४

मगर थोड़ी सी ले आया हूं भिक्षा मांग कर लौंगें,
मुझे मालूम है क्या चीज हैं यह सेर भर लौंगें।
मेरी श्रद्धा से बन जाएंगी लेकिन मालो जर[१] लौंगें,
उऋण हो जाऊं मैं स्वीकार हो जाएं अगर लौंगें।।

न देखें आप इन को ये हैं पैसे की न धेले की।
परन्तू (तु) भेंट है यह तुच्छ और मोहताज[२] चेले की।।

१५

गुरू ने दिल की आंखों से उधर फिर इक नजर देखा,
तो अपने शिष्य को गुरुभक्त और बांधे कमर देखा।
वहीं अपनी तलब[३] पर भी दुबारा गौर[४] कर देखा,
इधर देखा, उधर देखा मुआफिक[५] था जिधर देखा।।

दुआ[६] दी हो के खुश जब काम के काबिल[७] उसे पाया।
बड़ी गम्भीरता के साथ फिर इर्शाद[८] फरमाया।।

१६

निहायत[९] कद्र[१०] के काबिल[११] हैं यों तो भेंट लौंगों की,
मगर अफसोस[१२] इन से हो नहीं सकती मेरी तृप्ती[१३]।
असाधारण है तेरा आत्मा और आत्मिक शक्ती,
मुझे विश्वास है पूरी करेगा आस[१४] तू मेरी।।

मेरी गुरु-दक्षिणा यह है मिटा दे सर बसर[१५] शंका।
जमाने[१६] में बजा दे जाके वैदिक धर्म का डंका।।

---

१. धन, २. आसरेमन्द (पराश्रित), ३. चाह, ४. ध्यान, ५. अनुकूल, ६. आशीर्वाद, ७. योग्य, ८. गंभीर कथन, ९. बिल्कुल, १०. सम्मान, ११. खेद, १२. सन्तुष्टि, १३. आशा, इच्छा, १४. खेद, १५. स्पष्ट, खुल्लमखुल्ला, आंखों के सामने, १६. संसार में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७

जगादे उन को जाकर खाबे[१]-गफलत[२] में जो सोते हैं,
उन्हें हुशियार[३] कर जो जिन्दगी[४] बेकार खोते हैं।
उन्हें रस्ता बता जो भूल कर गुमराह[५] होते हैं,
उन्हों का रुख[६] बदल जो अपने बेड़े को डुबोते हैं।।

अवैदिक रीतियों को हुज्जते[७]-माकूल[८] से खो दे।
नजर आये जहां पाखंड उसे जड़ मूल से खो दे।।

१८

महर्षी ने सुना जिस वक्त इर्शादे[९]-बुजुर्गाना[१०],
वहीं सर रख दिया कदमों पे अपना फर्ज[११] पहचाना।
बड़े उत्साह से उत्तर दिया था जोशे-मर्दाना[१२],
'सर आंखों पर' 'सर आंखों पर' गुरू जी का यह फर्माना।।

करेगा हर तरफ तालीम[१३] यह जांबाज[१४] वेदों की।
कि गूंजेगी गगन मंडल में अब आवाज वेदों की।।

१९

गुरू की आज्ञा पर जिन्दगी कुर्बान[१५] कर दूंगा,
करूंगा जब कहीं संवाद उत्तर बेखतर[१६] दूंगा।
वचन देता हूं अपनी जान दूंगा खाह[१७] सर दूंगा,
फना[१८] मरहम[१९] की सूरत हो के नासूरों[२०] को भर दूंगा।।

प्रतिज्ञा हो गयी पक्की यह श्री दर्बार में मेरी।
कटेगी उम्र वैदिक धर्म के पर(प्र)चार में मेरी।।

१,२. गहरी (बेहोशी की) नींद, ३. सावधान, ४.जीवन, ५. राह भटकना, ६. मुख, ओर, ७. तर्क, ८. उचित, ९. गंभीर कथन, १०. बूढ़ों का, ११. कर्तव्य, १२. पुरुषोचित जोश के सहित, १३. शिक्षा, १४. प्राण-पण से लड़ने वाला, १५. बलिदान, १६. खतरे के बिना, निडर, १७. चाहे, १८. अस्तित्व खोने वाली, १९. औषध, २०. बहता हुआ फोड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०

जो चेला हो तो ऐसा हो किया अर्पण शरीर अपना,
गुरू देखो कि दुन्या में नहीं रखना नजीर[१] अपना।
जमीरे[२]-पाक[३] को दोनों ने समझा था मुशीर[४] अपना,
तलब[५] या दाद[६] कोई भी नहीं था दस्तगीर[७] अपना।।
हुआ ईसार[८] यह सारा पराये हर्ष की खातिर[९]।
कि दो कुर्बानियां[१०] हैं एक भारतवर्ष की खातिर।।

२१

खड़े थे और भी तो तीन विरजानन्द के चेले,
गुरू जी ने कहा चारों से तुम चारों हो अलबेले[११]।
हर एक तुम में से अब परचार को एक एक दिशा ले ले,
मगर था कौन ऐसा जो कि अपनी जान पर खेले।।
ठिटक कर रह गये तीनों मगर स्वामी बढ़े आगे।
वही तो मर्दे-मैदां है न जो मैदान से भागे।।

२२

वही जिन्दा है जिसने वक्फ[१२] करदी जिन्दगी अपनी,
किया हरदम भला औरों का कुछ पर्वा न की अपनी।
ऋषी की तरह कर सकता है कुर्बानी कोई अपनी?
हवन साकल्य[१३] की मानिन्द[१४] कर दी आहुती अपनी।।
मगर छोड़ा निहायते[१५] स्वच्छ करके वायु मण्डल को।
बहुत कुछ जिसने निर्मल कर दिया बुद्धि को और बल को।।

---

१. उपमा, उदाहरण, २. मन, ३. पवित्र, ४. मशवरा देने वाला (सलाहकार), ५. चाह, ६. प्रशंसा, ७. हाथ पकड़ने वाला, सहारा देने वाला, ८. निस्स्वार्थ दान, ९. के लिए, १०. बलियां (बलिदान), ११. विचित्र, १२. समर्पित, १३. सामग्री, १४. तरह, १५. बिल्कुल।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२३

सराहें[१] आपको हम क्यूं न विरजानन्द जी स्वामी,
निगाहे[२]-लुत्फ[३] से गुम हो गयी वेदों की गुमनामी[४]।
किया पैदा धुरन्धर शिष्य वैदिक धर्म का हामी[५],
मिटा दी जिस की पुख्ता-कारियों[६] ने देश की खामी[७]।।

बहुत जद्दो जहद[८] की और किया नाबूद[९] खटकों[१०] को।
दुबारा राह पर लाया हम ऐसे भूले भटकों को।।

२४

हमें लाजिम[११] है सच्चे दिल से गुन गायें मुदाम[१२] उनका,
पवित्र अपनी जबानों को करें ले ले के नाम उनका।
हमें सञ्जीवनी बूटी से बढ़ कर है कलाम[१३] उनका,
बड़ी अहसां[१४]-फरामोशी[१५] है हम भूलें जो काम उनका।।

कहानी उनके जीवन की जगा सकती है आलम[१६] को।
कथा ही उनकी ऐसी है कि इक आदर्श है हम को।।

२५

निछावर आंख के खाली गढ़ों पर बेशुमार[१७] आंखें,
करें जो रहबरी[१८] आंखों की खुद हों शक्ले गार[१९] आंखें।
जहां को दे गयीं इक रोशनी तारीको[२०] तार आंखें,
बना डालीं बगैर आंखों के ही दो की हजार आंखें।।

---

१. प्रशंसा करें, २,३. लाभकारी व आनन्ददायिनी दृष्टि, ४. खोया हुआपन ५. (पक्षपाती) मानने वाला, ६. मजबूत कामों, ७ कच्चापन, ८. संघर्ष, ९. खतम, १०. दुविधाओं, ११. आवश्यक, १२. सदा, हमेशा, १३. सन्देश, १४,१५. अहसान के न मानने वाले, १६. संसार, १७. असंख्य, १८. राह दिखाने वाली, १९. गढ़े की शक्ल में, २०. गहरा अंधेरा (अंधी आंखें)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बचाया है ऋषी सन्तान को भारी तहलकों[1] से ।
कदम उनके अगर पाऊं तो झाडूं[क] अपनी पलकों से।।

२६

हुई भारत की मुहसिन[2] उनके चेलों की हमादानी[3],
हमारे कान खोले हैं सुना कर वेद की बानी।
समझ कर दूध लस्सी पी रहे थे बन के अज्ञानी,
अलग अब हो गया जो मिल गया था दूध में पानी।।

हृदय ही बुतपरस्ती करते करते हो गया पत्थर।
वो पत्थर क्यूं न हो जिसका कि हो परमात्मा पत्थर।।

२७

हमीं पर्वत पे जाकर कोई पत्थर ढूंढ़ लाते थे,
हमीं परमात्मा पत्थर के टुकड़ों को बनाते थे।
हमीं उसको उठाते और मन्दिर में बिठाते थे,
हमीं खुश-एतकादी[4] से जनम बिरथा गंवाते थे।।

हमीं हैं रहम[5] के काबिल कि बनने में बिगड़ते थे।
हमीं तैयार करते थे कुआं और कूद पड़ते थे।।

(क) अपनी पलकों से बुर्श का काम लेना यानी कदम झाड़ना यह असीम श्रद्धा का लक्षण है परन्तु नीच सेवा है इसलिए यहां ''झाडू लिखा गया है न कि ''झाड़ें'' उत्तम पुरुष एक वचन की क्रिया केवल लेखक का बोध कराती है जिससे अन्य सज्जनों को नीच सेवा में प्रवृत्त करना बुरा न मालूम हो , ऐसा ही अवसर शेख सादी के सामने आ गया था तो बेतकल्लुफ लिख दिया कि :

करीमा! बबखशाय बर हाले ''मा''।
कि ''हस्तम'' असीरे कमन्दे हवा।।

अर्थात्–हे ईश्वर हम सब पर दया-दृष्टि रख क्योंकि मैं तृष्णा-बन्धन में फंसा हुआ हूं। देखिये–दया-दृष्टि रखने की प्रार्थना तो सब के लिए की गयी(बर हाले-मा बहुवचन है)और लोभादि के जाल में फंसा हुआ केवल अपने को ही बताया है। मैंने भी उसी अदब को मद्देनजर रखकर ''शुतरगुर्बा) नामक दोष की पर्वा नहीं की। (–बेताब)

१. हंगामों, २. अहसान करने वाली, ३. सूझबूझपन, ४. अच्छा विश्वास, ५. दया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२८

बनाई तो बनाई क्या? कि एक तस्वीर[१] पत्थर की,
लगी छैनी हमारी खुल गयी तकदीर[२] पत्थर की।
कभी हो सकती थी यह कद्र[३] यह तौकीर[४] पत्थर की,
खता[५] अपनी है इस में कुछ नहीं तकसीर[६] पत्थर की।।

वही तस्वीर का पत्थर अगर घिसता तो घिस जाता।
मगर चक्की बना लेते तो कुछ आटा तो पिस जाता।।

२६

मजा[७] यह था कि हम समझे थे अपना लाभ हानी में,
मरे जाते थे मुर्दों के लिए हुंडी रसानी[८] में।
हजारों खर्च कर देते थे उनकी मेहमानी[९] में,
समझ में आ गया गंगा नदी है कितने पानी में।।

लगा कर एक गोता उम्र भर के पाप खोते थे।
मगर कुछ खो के यह पाया, बदन का मैल धोते थे।।

३०

फंसे थे हम गरज[१०] बेतरह ऐसे ही झमेलों में,
बपा[११] तूफान[१२] था और हम बहे जाते थे रेलों[१३] में।
रहा करते थे बच्चों की तरह मशगूल[१४] खेलों में,
यह कोशिश थी कि निकले आम का सा रस करेलों में।।

ऋषी ने खोल दीं आंखें तो सब मजमूं[१५] नजर[१६] आया।
दिया अंजन हमें ऐसा कि ज्यूं का त्यूं नजर आया।।

---

१. फोटो, २. भाग्य, ३,४. सम्मान, ५,६. अपराध, ७.आनन्द, ८. पहुंचाने, ९. अतिथि सत्कार, १०. अर्थात् (जरूरत), ११. उठा, १२. बेहिसाब (बहुत) उठा, १३. चलती भीड़, १४. लगे रहना, १५. विषय, १६. दिखाई ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३१

समावर्त्तन का दिन शुभ था मुबारक[१] था समावर्त्तन,
गुरु चेले जो अच्छे थे हुआ अच्छा समावर्त्तन।
दिखाये ईश्वर अब फिर कोई ऐसा समावर्त्तन,
गुरुकुल से हो पूरे ब्रह्मचारी का समावर्त्तन।।

भला केवल समावर्त्तन करेगा जाते-इन्सा[२] का।
यहां झगड़ा नहीं है कोई हिन्दू या मुसलमां का।।

३२

न क्यूं मकबूल[३] हो बेताब अन्दाजे[४]-रकम[५] तेरा,
रकम[६] करता है जब औसाफ[७] स्वामी के, कलम तेरा।
कलम का तू धनी है और कलम भरता है दम तेरा,
युं ही लिखना सफर जब तक न हो सूए-अदम[८] तेरा।।

करें कर्त्तव्य पालन आओ सब मिल कर दहन खोलें।
ऋषी की और विरजानन्द की दोनों की जय बोलें।।

ओम् शम्।

१. धन्य, २. मनुष्य की जाति, ३. मानने योग्य, ग्रहण(स्वीकार) करना, ४. तरीका, ५. लिखने का, ६. लिखता, ७. विशेषताएं, खूबियां, ८. न होने की तरफ (मौत)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसद्दस ३

जो अक्तूबर १६१६ ई० में लिखा गया

ऋषि की जिन्दगी-बख्श[1] मौत

रुबाई

स्वामी से फुजूं[2] हामिये[3]-तौहीद[4] नहीं,
उपदेश कोई काबिले-तरदीद[5] नहीं।
मुर्दा है समझता है इसे जो मुर्दा,
क्या नामे-निको[6] जिन्दए-जावीद[7] नहीं।।
(बेताब)

१

सरीरे[8]-किल्क[9] है इक जमजमा[10] भी और नाला[11] भी,
मेरा मजमून[12] क्या है मर्सिया[13] भी रागमाला भी।
हुरूफों[14] में है रोशन[15] रोशनाई से उजाला भी,
सियाही नाम है मातम[16] में पैराहन[17] है काला भी।।
खुले जाते हैं दोनों लब[18] कलम के मुसकराने से।
हुए सीने के दो टुकड़े जिगर पर चोट खाने से।।

---

१. जीवन को देने वाली, २. बढ़कर, ३. एक होने का, ४. मानने वाला, ५. रद्द कर दूसरा लाना(बदलने योग्य), ६. नेक नाम, ७. हमेशा जिन्दा, ८. सरकना, चलना, ६. कलम का, १०. खुशी की आवाज, ११. गम की आवाज(कहते हुए रोना), १२. लेख, विषय, १३. गर्मी में पढ़े जाने वाले गीत, १४. शब्दों, १५. प्रकाशित, १६. मौत की गर्मी, १७. छाती पीट कर शोक प्रकट करना, १८. ओठ (कलम के)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२

उठेगा बज्म[१] से बेताब क्या दादे-सुखन[२] लेकर,
कि सेहरा बांधने बैठा है तू तारे-कफन[३] लेकर।
किया है अज्मे[४] नज्मे[५]-नौ खियालाते-कुहन[६] लेकर,
खुशी की आस मजमूने[७]-फिराके[८]-रूहोतन[९] लेकर।।

तने-बेजां[१०] का चेहरा आज आलूदा[११] है गाजे[१२] में।
अरूसे[१३]-शादमानी[१४] जल्वा[१५]-अफगन[१६] है जनाजे[१७] में।।

३

हजारों मर चुके हैं फर्द[१८] थे जो खुश-बयानी में,
हजारों चल बसे बेमिस्ल[१९] थे जो नुक्ता-दानी[२०] में।
हजारों उठ गये रहता था अमरित जिनकी बानी में,
हजारों कर गये उपदेश अपनी जिन्दगानी में।।

सबक[२१]क्या क्या दिये लेकिन ऋषी की मौत ने हम को।
मुनी ने मरके मरना तक सिखाया एक आलम[२२] को।।

४

तनो-जांके[२३] बहम[२४] रहने का वादा हो गया पूरा,
तो योगीवर को मर्गे[२५] तफरका-पर्दाज ने घूरा।
किसी सफ्फाक[२६] सेवक ने जो डाली दूध में बूरा,
मिलाया पीस कर पाजी ने उसमें कांच का चूरा।।

किया कातिल का भी विश्वास फर्ते[२७] पार्साई[२८] से।
कि मीठा जहर था जो पी गये दिल की सफाई से।।

१. शायरों(मित्रों की बैठक) सभा, २. शायरी के अच्छे बोल, ३. कफन के धागे, ४. इरादा, ५. नया विधान, ६. पुराने विचार, ७. विषय, ८. अलग होना, ९. आत्मा और शरीर, १०. जान से रहित(मरा) शरीर, ११. लिपटा हुआ, १२. गालों पर लगाने की लाली, १३. दुल्हन, १४. खुशी, १५. खूबसूरत चेहरा (दिखाना) दिखाई देना, १६. फेंकना, १७. अर्थी, १८. अकेले, १९. अनुपम (बेमिसाल), २०. नुक्ते नुक्ते को पहचानने वाले, २१. शिक्षा, २२. संसार, २३. शरीर और आत्मा के, २४. इकट्ठा, २५. मौत(ने) द्वेष डालकर, २६. चालाक, २७. जोश, २८. अधिक पवित्र।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५

असर से कांच के गोया[१] कजा[२] सर पर ही आ खेली,
बढ़ी तकलीफ[३] इस दर्जा कि अब दाता ही है बेली[४]।
मगर समदर्शिता देखो अजीयत[५] रात भर झेली,
न सोतों से कहा, हर शय[६] जरूरी आप ही ले ली।।

जो होता दूसरा कोई मकां सर पर उठा लेता।
न सोता आप और सोतों को रो रोकर उठा लेता।।

६

दवा दारू[७] में गुजरा जब युंही अर्सा[८] कई दिन का,
तो बिगड़ा हाल ऐसा कसरतें[९]-इस हाल से इनका।
यहां तक हो गया लागिर[१०] बदन भारत के मुहसिन[११]का,
कि जैसे हो गया हो कोई गन्ना सूख कर तिनका।।

लहू की तरह मोहलिक[१२] कांच जा पहुंचा रगो-पय[१३] में।
न निकला जान से पहले वह दस्तों[१४] में न कुछ कय[१५] में।।

७

उभर आये दहन[१६] में जहर की गर्मी से जब छाले,
हुई गोयाई[१७] जख्मी, बोलने के पड़ गये लाले।
लबों[१८] पर पड़ गये थे आबले[१९] तालू पे तबखाले[२०],
यह वह तकलीफ थी चिल्ला उठे थे देखने वाले।।

न नाला[२१] था न शेवन[२२] था न शोरे आहो जारी था।
मुसलसल[२३] ओम् का था विर्द[२४] हरदम शगले-बारी[२५] था।।

---

१. सर्वथा मान्य (मान लो), २. मौत, ३. दुःख, पीड़ा, ४. रक्षक, ५. तकलीफ, ६. वस्तु, ७. दवा, ८. समय, ९. अधिक, १०. कमजोर, ११. परोपकारी, १२. मार डालने वाला, १३. (बारीक, मोटी) नसों में, १४. शौच(पाखाना), १५. उल्टी, १६. मुंह, १७. बोलने की ताकत, १८. ओठों, १९. छाले, २०. लाल धब्बे, २१. रोना, २२. झींकना, २३. बराबर(सिलसिलेवार), २४. जपना, २५. काम (प्रभु का नाम लेना, जाप)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८

जमाने भर को अब तड़पा दिया बिजली के तारों ने,
यह सुनते ही किया अजमेर का रुख[१] बेकरारों[२] ने।
यती का हाल जब पूछा यती के गमगुसारों[३] ने,
तो उत्तर आंसुओं से ही दिया तीमारदारों[४] ने।।

न घबराओ, ऋषी बोले दशा यह देख कर इन की।
मुझे आराम होने में है बाकी देर दो दिन की।।

९

हुई ग्यारह बजे दिन के जो हाजत[५] शौच जाने की,
उठे खुद ही न देखी राह औरों के उठाने की।
इजाजत[६] दी न लेकिन जौफ[७] ने चौकी तक आने की,
कदम भर चल के नौबत आई पाऊं लड़खड़ाने की।।

वहीं बढ़कर सहारा दे दिया लाचार पुरुषों ने।
सरापा[८] नातवानी[९] को संभाला चार पुरुषों ने।।

१०

यती के सामने था रात दिन व्यवहार वेदों का,
नजर आने लगा यूं और ही आकार वेदों का।
सहारा चार पुरुषों का न था जिनहार[१०] वेदों का,
लिया था आसरा स्वामी ने गोया चार वेदों का।।

मरज[११] में मुबतिला[१२] था मन न कष्टों में न खेदों में।
घुसा था आत्मा योगी का गोया चार वेदों में।।

---

१. ओर, २. बेचैन लोगों, ३. गम में शरीक होने वालों, ४. बीमार के सेवकों, ५. वेग (शंका) शौच की, ६. आज्ञा, ७. कमजोरी (बेहोशी), ८. समूचा, सारा, ९. कमजोरी, १०. हरगिज, ११. रोग, १२. फंसा हुआ (ग्रस्त)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११

हवायज[1] से हुए फारिग[2] तो खुद ही हाथ मुंह धोकर,
निहायत[3] शान्ती से आप जा लेटे सरे-बिस्तर।
किया कुछ देर हब्से-दम[4] समाधी के तरीके पर,
रहा अन्दर का अन्दर सांस बाहर का रहा बाहर।।

न थी उस दम किसी को भी मजाले[5]-दमजदन[6] हरगिज।
जबानें तो हजारों थीं न थी ताबे-सखुन[7] हरगिज।।

१२

नफस[8] की आमदोशुद[9] बन्द देखी लोग घबराये,
इसी अर्से में जीवनदास जी लाहौर से आये।
हुए दर्शन तो वो बख्ते-रसा[10] पर अपने इतराये,
ऋषी ने आंख जब खोली जबां पर यह सखुन[11] लाये।।

हुआ यह हाल क्या? हैं आप भगवन् किस अवस्था में।
यती बोले मगन हूं आज मैं ईश्वर की इच्छा में।।

१३

न घबराएं जरा भी देख कर यूं हमनशीं[12] मुझ को,
मरज[13] कर ही नहीं सकता कभी अन्दोहगीं[14] मुझ को।
तुम्हें तकलीफ[15] जो कुछ हो रही है वह नहीं मुझ को,
अलग है देह से देही यह है हक्कुल्[16]-यकीं[17] मुझ को।।

हरारत[18] जिस्म[19] की करती रहे यूं सोजिश[20] अफजाई[21]।
मकां में आग लगती है, मकीं[22] है इक तमाशाई।।

---

१. शौचादि जरूरतें, २. निवटे, ३. बिल्कुल, सर्वथा, ४. प्राणायाम, ५. हिम्मत, ६. दम लेना, सांस लेना, ७. बोलने की हिम्मत, ८. श्वास, ९. आना जाना, १०. सौभाग्य, ११. बोल, कथन, १२. साथ बैठने वाले, १३. रोग, १४. दुःखी, गमगीन, १५. दुःख, पीड़ा, १६. दृढ़, १७. विश्वास, १८. शरीर की गर्मी, १९. शरीर, २०. जलन, २१ बढ़ाती, २२. मकान में रहने वाला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४

बदन में ना-तवानी[१] है, बदन है ना-तवानी में,
तअल्लुक[२] कुछ नहीं इनसे मेरा इस दारे फानी[३] में।
न इनके लाभ में है लाभ, हानी है न हानी में,
कि मैं इस तरह हूं इस में कमल जिस तरह पानी में।।

सताएं बे-तअल्लुक[४] ही नहीं इनका यह बलबूता[५]।
मुझे क्यों कर छुएंगे वे कि मैं इन को नहीं छूता।।

१५

इन्हें समझा के उत्कण्ठा[६] हुई कुछ और स्वामी को,
बुलाया आत्मानन्द और श्री गोपालगिर जी को।
हुए पर(प्र)सन्न मन में देख कर दोनों की भक्ती को,
प्रशंसा की गुनों की और सराहा[७] उन की बुद्धी को।।

कुशल और क्षेम भी मानो कुशल और क्षेम से पूछा।
न इतना ही कि पूछा, बल्कि सच्चे प्रेम से पूछा।।

१६

कहो इस वक्त हे धीमान[८]! क्या इच्छा तुम्हारी है,
तजो संकोच कह दो बात जो कुछ दिल में धारी है।
यहां से कूच[९] कर जाने की तइयारी हमारी है,
खड़ी तैयार आकर द्वार पर गोया[१०] सवारी है।।

जबां पर आह योगीराज के जब यह बचन आया।
सुना ही था कि दोनों रो पड़े और कुछ न बन आया।।

---

१. (तवानाई=ताकत) ना-तवानी=कमजोरी, २. रिश्ता, सम्बन्ध, ३. (दुनिया) अनित्य, ४. विना रिश्ते, ५. शक्ति-सामर्थ्य, ६. जानने की इच्छा, ७. प्रशंसा की, ८. बुद्धिमान् , ९. प्रस्थान १०. मान लो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७

बड़े इसरार[१] से बोले तो यह बोले कि हे स्वामी!
अवैदिक धर्म के यमराज! वैदिक धर्म के हामी[२]!
निरन्तर निष्कपट! निष्पक्ष! हे निष्पाप! निष्कामी!
कहें तो क्या कहें आगे खड़ी है शक्ले-नाकामी[३]।।

जहां की वस्तुओं में सब को प्यारी जिन्दगानी है।
तुम्हारी जिन्दगानी ही हमारी जिन्दगानी है।।

१८

बचन से, कर्म से, मन से हमारी है यही इच्छा,
अभी जाती रहे भगवन्! सुकोमल अङ्ग की पीड़ा।
कजा[४] के हाथ से होने न पाये बाल तक बांका,
रहे कायम[५] हमारे सरपे चरनों का अभी साया।।

सिवा इस के हमारे दिल में इच्छा है न आशा है।
निवेदन कर रहे हैं जो यही सच्ची तमन्ना[६] है।।

१९

बहुत कुछ कर चुके लेकिन बहुत कुछ काम करना है,
बहुत से जख्म[७] हैं बाकी कि मरहम[८] उनमें भरना है।
बहुत सी शमुअ[९] हैं ऐसी कि जिनका गुल[१०] कतरना है,
दुखी है दीन भारतवर्ष उसका दुःख हरना है।।

दयामय आप हैं, हम को न रोता छोड़कर जाएं।
हजार अफसोस हम जीते रहें और आप मर जाएं।।

---

१. जोर देते हुए, २. मानने वाले, ३. असफलता की सूरत, ४. मौत, ५. स्थिर, ६. इच्छा, ७. घाव, ८. औषध (घाव-भरने वाली), ९. मोमबत्ती, १०. (दीपक के ऊपर की) राख।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०

ऋषी बोले अनादी चक्र है यह तो जमाने का,
बिगड़ना एक का है यत्न लाखों के बनाने का।
किया गेहूं ने पूरा काम जब गेहूं उगाने का,
पता मिलता नहीं तब खेत में गेहूं के दाने का।।

मुझे चलने ही दो राहे-फना[१] में चाल गेहूं की।
हजारों बाल दे डालेगी इक इक बाल गेहूं की।।

२१

न मेरा गम[२] करो जगदीश रक्षा करने वाला है,
कि अब यह बोझ भगवत ने तुम्हारे सर पे डाला है।
मेरी हस्ती है जब तक एक दीपक का उजाला है,
जरा सी देर में देखोगे घर घर दीप-माला है।।

अंधेरा हर तरफ है देखकर इस को न डर जाना।
दिया वेदों का लेकर हाथ में चाहे जिधर जाना।।

२२

कोई पुर्सां[३] हुआ, क्या हालते-सरकारे-वाला है?
तो स्वामी जी ने फरमाया अंधेरा है उजाला है।
अनोखी[४] चीस्ता[५] है यह मुअम्मा[६] यह निराला है,
जबाने[७]-पाक[८] का इक शब्द भी उपदेश-माला है।।

जरा सा है यह फिकरा[९],कितनी वसअत[१०] है मतालिब[११] में।
तअज्जुब[१२] है कि हैं रूहें[१३] बहुत-सी एक कालिब[१४] में।।

---

१. मौत के रास्ते, २. शोक, ३. पूछने वाला, ४. अद् भुत, ५. पहेली, ६. गुत्थी, रहस्य, ७. जीभ, ८. पवित्र, ९. वाक्य, १०. फैलाव, ११. मतलब, १२. आश्चर्य, १३. आत्माएं, १४. जिस्म(शरीर)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२३

बजे जिस वक्त साढ़े पांच और मनहूस[1] शाम आयी,
चला कुछ जोर हिकमत[2] का न कुछ तदबीर[3] काम आयी।
तबीबों[4] पर कजा[5] हंसती हुई बे रोक थाम आयी,
मुकर्रर[6] इसका आना था तो आयी ला-कलाम[7] आयी।।

अजल[8] ने दस्त-बस्ता[9] अर्ज[10] की, इर्शाद[11] है भगवन्।
बहुत कुछ अन्य लोकों में तुम्हारी याद है भगवन्।।

२४

ऋषी ने एक पण्डितवर से पूछा अब समय है क्या?
दिया उत्तर अदब[12] से उसने होती आई है सन्ध्या।
महीना क्या है? कार्तिक,पक्ष? काला, तिथि? अमावस्या,
बड़ी प्रसन्नता से आपने सुन कर यह फरमाया[13]।।

पवन इस वक्त पावन है, सुमन आशा के खिलते हैं।
जुदाई का गिला[14] किसका, कि दोनों वक्त मिलते हैं।।

२५

मुनी के मुंह से निकला मन्त्र बारम् बार गायत्री,
वह गायत्री है क्या सरचश्मए[15]-अनवार[16] गायत्री।
जो अक्षर है वो हैं अमरित की बूंदें, धार गायत्री,
कि है मुर्दा दिलों को आबे-हैवां-बार[17] गायत्री।।

ध्वनी थी वेद-मन्त्रों की, मुनी थे लय इसी धुन में।
घुसे थे रूह[18] बन कर वेद या जिस्मे-सतो-गुन[19] में।।

---

१. बुरी, २. अक्लमंदी, ३. उपाय, ४. चिकित्सकों(बुद्धिमानों), ५. मौत, ६. निश्चित, नियत, ७. विना संदेश, ८. यमराज(मौत), ९. हाथ जोड़कर, १०. नम्रता से कहा, ११. गंभीर वचन, बड़े से (उपदेश) लेने, १२. सम्मान, १३. फरमाया, १४. शिकायत, १५,१६. स्रोत रोशनियों का, १७. अमृ त, १८. आत्मा, १९. सतोगुणी शरीर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२६

लगे फिर प्रार्थना करने कि हे जगदीश! हे भगवन्!
दयामय! सर्व जगदाधार! व्यापक! सर्वशक्तीमन्!
हुआ था लोप जैसा मुद्दतों[१] से धर्म का शासन,
तुम्हारी प्रेरणा से हो ़गया इस का पुनर्जीवन।।

यह वैदिक धर्म, भारतवर्ष क्या, दुन्या में जारी हो।
यही इच्छा है मेरी, पूर्ण बस इच्छा तुम्हारी हो।।

२७

कदम था वक्त का जिस दम सफेदी ओ सियाही में,
हुए मसरूक[२] खामोशी से वो यादे-इलाही[३] में।
परम ज्योतिः का जल्वा[४] था यती की खुशनिगाही में,
मगर कमबख्त भारतवर्ष का बेड़ा तबाही में।।

ऋषी ने खींचकर प्राणों को प्राणायाम के द्वारा।
दिखाया हाय हमको एक हैबत[५]-नाक[६] नज्जारा[७]।।

२८

कलम के हौसिले[८] अब इस के आगे से पस्त[९] होते हैं,
कि कुद्रत[१०] के यहां कुछ और बन्दोबस्त[११] होते हैं।
गमो[१२] रंजो[१३] अलम[१४] बढ़ते हैं और हमदस्त[१५] होते हैं,
यह वह सन्ध्या है दो दो सूर्य जिसमें अस्त होते हैं।।

प्रकाशक हैं ये दोनों देव, नामी भी गिरामी[१६] भी।
तिमिर[१७]-नाशक है सूरज भी, तिमिर-नाशक हैं स्वामी भी

---

१. बहुत समय से, २. लीन (व्यस्त), ३. प्रभु की याद, ४. रोशनी से भरपूर खूबसूरत चेहरा ५,६. डर से भरा, डरावना ७. दृ श्य ८. हिम्मत ६. हारना १०. प्रकृ ति, ११. प्रबंध, १२-१४. दुःख तीन प्रकार के, १५. हाध मिलाते (साध), १६. नाम वाले (प्रसिद्ध), १७. अन्धकार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

२६

हजार अफसोस यूं तकदीर[१] भारतवर्ष की फूटी,
शबे[२]-तारीक[३] में मशअल[४] हमारे हाथ से छूटी!
न नुसखे बे असर निकले, न हिकमत[५] ही रही झूटी,
दवाओं की खता क्या है कि टूटी की नहीं बूटी।।

अभी कुछ दूर थी मंजिल कि हम से रहनुमा[६] बिछड़ा।
सफर आसां था जिसके दम कदम से रहनुमा बिछड़ा।।

३०

सबक[७]आमोज[८] मंजिल है कि स्वामी जी का लाशा[९] है,
यह माजी[१०]और मुस्तकबिल[११]की आशा और निराशा है।
पड़ा गम टूट कर हम पर यह कैसा बे-तहाशा[१२] है,
इसे हम देख ही सकते नहीं कैसा तमाशा है।।

जो अहले-दिल[१३]हैं वो सुनते ही दिल पर चोट खाते हैं।
यगाने[१४] और बेगाने[१५] खड़े आंसू बहाते हैं।।

३१

कमल दिल के खिले हैं या सफें[१६] हैं दिल के दागों की,
इसी दीपक से नौबत[१७] आई घर घर में चिरागों की।
इसी माली ने तख्ताबन्दी[१८] की मजहब के बागों की,
इसी बुलबुल के नगमों से दबी आवाज जागों[१९] की।।

दवाये-दर्दे-दिल और जख्म का मरहम इसे कहिये।
अगर मुन्सिफ[२०] है दिल तो मोहसिने-आलम[२१] इसे कहिये।।

---

१. भाग्य, २. रात, ३. अंधेरी, ४. मशाल, ५. इलाज करना(अक्लमंदी), ६. मार्ग (रास्ता) दिखाने वाला, ७. पाठ, ८. सीखना (सबक याद करना), ९. मृ त शरीर (लाश), १०. भूत (गुजरा हुआ) समय, ११. आने वाला (समय), १२. सीमा से अधिक, १३. दिल वाले, १४. अपने, १५. पराये, १६. सामने मुंह की लाइनें, १७. विशेष परिस्थिति बन जाना, १८. बाड़ लगायी, १९. कौओं की, २०. इन्साफ करने वाला, २१. अहसान करने वाला(जग का परोपकारी)।

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३२

किया "भस्मान्तम्" के साथ जब नरमेध जंगल में,
बसा जंगल भी बूये[1]-जाफरानो[2]-मुश्को[3]-सन्दल[4] में।
मिली अग्नी में अग्नी, भूमि में भूमी तो जल जल में,
रमा आकाश में आकाश, वायू वायु-मण्डल में।।

अमानत देह जिस जिस की थी अग्नी ने उसे दे दी।
रहा उपदेश बाकी और खाली रह गयी वेदी।।

३३

हमारा काम अब यह है कि उनके काम को देखें,
करें तदबीर और तदबीर[5] के अंजाम[6] को देखें।
हमें जो कुछ कि पहुंचाया है उस पैगाम[7] को देखें,
न खुदबीनी[8] के बस में हो के अपने नाम को देखें।।

करें जो काम, मिलजुल कर, कि मिलना बल बढ़ायेगा।
मिलेगा एक से जब एक (११) गयारह नाम पायेगा।।

३४

सखुन[9] बेताब का रंगे-सखुन-गोई[10]-से खाली है,
न मजमूं[11]-आफरीनी[12] है न कुछ नाजुक-खयाली[13] है।
न किस्सा ही निराला है न बन्दिश ही निराली है,
न उर्दू है न हिन्दी है जबां की पायमाली[14] है।।

बस अब खामोश हो लिखने की शक्ती देख ली तेरी।
ऋषी भक्ती का था इजहार[15] भक्ती देख ली तेरी।।

ओम् शम् ।

---

१. सुगंध, २. केसर, ३. कस्तूरी(हिरण के नाभि से निकली), ४. चंदन, ५. उपाय, ६. परिणाम, ७. संदेश, ८. स्वार्थपरता, ९. काव्य(शायरी), १०. शायरी के रंग(विशेषताओं, भेदों), ११. विषय, १२. प्रशंसा के योग्य, १३. कमजोर(मुलायम) विचारों वाली, १४. (जबान का) घिसना, १५. जाहिर (प्रकट) करना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसद्दस ४

(इसका सन् याद नहीं रहा)

शास्त्र और शस्त्र दोनों बस में हैं

रुबाई

बढ़ता है जो क्रोध अक्ल घट जाती है,
फिर ज्ञान की काया ही पलट जाती है।
शमशीरे[१]-गजब को है अजब[२] ढाल "क्षमा",
इस ढाल पे तलवार भी कट जाती है।।

"बेताब"

१

ऋषी को शास्त्र भी और शस्त्र भी सब प्यार करते थे,
न ये करते थे शर्मिन्दा[३] न वो कुछ वार करते थे।
वो इन से और ये उन से उचित व्यवहार करते थे,
मुकाबिल[४] आके दोनों प्रेम का इजहार[५] करते थे।।

सखुन[६] को दे जिला बेताब इनके आत्मिक बल से।
जरा[७] नोके-कलम[८] का काम ले तलवार के फल से।।

---

१. तलवार, २. आश्चर्यजनक, ३. लज्जित, ४. सामने, ५. प्रकट, ६. शायरी, ७. थोड़ा, ८. कलम की नोक।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२

करनवास इक नगर है जिसकी दामनगीर[१] थी गङ्गा,
यह गङ्गा-तीर पर था, और इसके तीर थी गङ्गा।
तपोधन तापसों की कुद्रती[२] जागीर थी गङ्गा,
गुलू[३] के साथ थी यूं मौज[४] जन भागीरथी गङ्गा।।

इशारे[५] के लिए जिस तरह क़ोई हाथ उठाता है।
इधर आओ इधर आओ यह कहता और बुलाता है।।

३

निमन्त्रण पाके गङ्गा का सुनी इकबार आ निकले,
दया की मूरती आनन्द का अवतार आ निकले।
विचरते घूमते करते हुए उद्धार आ निकले,
करनसिंह राव का करने को बेड़ा पार आ निकले।।

नगर सत्सङ्ग से स्वामी के संगम[६] बन गया प्यारा।
इधर गङ्गा की धारा थी इधर उपदेश की धारा।।

४

लगाया जिसने गोता आके ऐसे स्वच्छ पानी में,
मजा[७] मुक्ती[८] का उस को मिल गया इस जिन्दगानी में।
अमर क्यूंकर न हो अमरित भरा है वेद बानी में,
शकर, कन्दे-मुकर्रर[९] हो गयी शीरीं-बयानी[१०] में।।

यह माना इल्म[११] अच्छा है, दवा अच्छी, तबीब[१२] अच्छा।
उसी का रोग होगा दूर है जिसका नसीब[१३] अच्छा।।

---

१. आंचल में बहने वाली, २. प्राकृतिक, ३. गले, ४. जोर-शोर से बहना (लहर लेती हुई), ५. संकेत, ६. दो धाराओं के मेल का स्थान, ७. आनन्द, ८. मोक्ष, ९. दोहरी मिठास, १०. मीठे बोल, ११. विद्या, १२. चिकित्सक, १३. भाग्य ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५

तमोगुण से रजोगुण से मुकद्दर[१] हो चुका जो दिल,
असर उपदेश का उस पर हो कुछ,यह बात है मुशकिल[२]।
गुरू ब्रह्मा मिले या शिव, रहे जाहिल[३] वही जाहिल,
तिही[४]-दस्ताने[५]-किस्मत[६] रा[७] चे सूद[८] अज[९]-रहबरे[१०]-कामिल[११]।।

न दर्या से मिले कतरा[१२], न दे रेगे-रवां[१३] जर्रा[१४]।
कि खिज्र[१५] अजआबे[१६]-हैवांतिश्ना[१७] भी आरद[१८] सिकन्दररा[१९]।।

६

करनसिंह भी तो ऐसे ही नसीबे[२०] के सिकन्दर[२१] थे,
कि अदरक हाथ में भी आ गया लेकिन ये बन्दर थे।
सुधा के कुण्ड जब मौजूद[२२] उस कस्बे के अन्दर थे,
गलत है कुण्ड कहना वो सुधा के इक समन्दर थे।।

न चक्खी बूंद भी अफसोस[२३] है मन की मलिनता से।
खड़े गङ्गा किनारे थे मगर फिर भी रहे प्यासे।।

७

हुई अफसोस कजफहमों[२४] की सोहबत[२५] में समझ बांकी,
मुसाहिब[२६] थे वही, जो रोटियां खाते थे "जी हां" की।
ठनी इक रोज यह दिल में कि देखें कृष्ण की झांकी,
पिता का कुछ करें अपमान और कुछ दुर्गती मां की।।

मुहइया[२७] हो गया सामान फौरन रास-लीला का।
हुआ मंजूर[२८] मुजरा राव को राधा सुशीला का।।

---

१. भाग्य, २. कठिन, ३. अनपढ़, ४.खाली, ५. हाथ(दोनों); ६. भाग्य, ७. को, चे=क्या, ८. फायदा, ६. से, १०. मार्गदर्शक, ११. श्रेष्ठ, १२. बूंद, १३. बहता रेत, १४. कण, १५. एक राह दिखाने वाले महापुरुष का नाम, १६. चश्मे (अमृ त) से, १७. प्यासा, १८.ले आये, १६. सिकन्दर को, २०,२१. भाग्य वाले, २२. उपस्थित, २३. खेद, दुःख, २४. टेढ़ा सोचने वाले, २५. संगति, २६. पास या साथ बैठने वाले, २७. इकट्ठा, २८. स्वीकार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८

महा उत्सव के हीले[१] जो रंगीले थे इधर आये,
सियः दिल, हुस्न-बीं[२], रंगींमिजाजो, बदनजर आये।
कई पंडित, कई साधू, कई स्वामी निडर आये,
मगर जो आये वो भक्ती की चादर ओढ़कर आये।।

बजाहिर[३] भक्त थे, भगवान् के पक्के पुजारी थे।
हकीकत[४] में मगर टट्टी की ओझल ये शिकारी थे।।

६

थिरकते थे कन्हैया राधिका बन बन के जो लड़के,
इन्हें लड़के न कहिये, थे कुल्हाड़े धर्म की जड़ के।
शरर[५]-अफगन[६] हुआ जब हुस्न[७] शौले[८] इश्क[९] के भड़के,
उधर घुंघरू हुए छन छन, इधर लोगों के दिल धड़के।।

रहे दिल जब न अजखुद[१०]-रफतगी[११]से मिल्क[१२] मालिक् की।
पखावज[१३]से सदा[१४] आने लगी उस वक्त "धिक् धिक्" की।।

१०

बुलाया था महाराजा ने उस जल्से में स्वामी को,
दिखाने को तमाशा 'धर्म-वध' का धर्म-गामी को।
कोई बदनाम कर सकता है अपनी नेकनामी को,
मुनी ने कर दिया वापस झिड़क कर उस पयामी[१५] को।।

दुराचारी हो जो इस तरह का व्यवहार वह देखे।
नरक में जिसको जाना हो, नरक का द्वार वह देखे।।

---

१. वहाने, २. खूबसूरती को देखने वाले (पसंद करने वाले), ३. देखने को, ४. वास्तव, ५. चिंगारी, ६. फेंकी, ७. सौन्दर्य, ८. आग का गोला (उठती आग), ९. प्रेम के शोले, १०. से, स्वयं, ११. खो देना अपने आप को, १२. जागीर, १३. बाजा विशेष, १४. आवाज, १५. सन्देश वाहक ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११

सुना जब राव साहिब ने पयामी[१] से जवाब उलटा,
वहीं होने लगा उस सत्यवादी पर इताब[२] उलटा।
तमोगुण उनको समझाने लगा बढ़कर हिसाब उलटा,
तो सम्बोधन हुआ उलटा, लकब[३] उलटा, खिताब[४] उलटा।।

कसैला रस गजब[५] की आग से फौरन उबल आया।
भरा था जो पतीली में वही बाहर निकल आया।।

१२

रहा वह रास में बेचैन, बिस्तर पर रहा मुजतर[६],
कि देती तल्खकामी[७] ख्वाबे-शीरीं[८] का मजा क्यों कर।
कभी लेटा, कभी उट्ठा, तड़पता ही रहा शब[९] भर,
किसी का पड़ गया है पांव गोया नाग के फन पर।।

समय राहत का जो आसान था, वह भी कठिन निकला।
कटी मुश्किल[१०] से रात उसकी, बड़ी मुश्किल से दिन निकला।।

१३

सिपाही चन्द लेकर साथ वह स्वामी के पास आया,
न थी ताबे-सखुन[११] मुतलक[१२] यहां तक बद हवास[१३] आया।
यह खुलता था कि राहू सूर्य का करने को ग्रास आया,
पहन कर आज या यमराज इन्सां का लिबास[१४] आया।।

हुआ जाता था रोशन दिल का सब मजमून[१५] आंखों से।
टपकता था खुला जोशे-गजब[१६] में खून आंखों से।।

---

१. सन्देश वाहक, २. सजा देने का विचार, ३. नाम रखना(उपाधि देना), ४. संबोधन, ५. तेज, ६. बेचैन, ७. कड़वा नतीजा, ८. मीठी नींद, ९. रात भर, १०. कठिन, ११. बोलने की हिम्मत, १२. बिल्कुल, १३. परेशान हाल, १४. वेश, १५. विषम, १६. तेज ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४

वहां तो हो रही थी वेद के उपदेश की वर्षा,
नगर के लोग करने आये थे जीवन सुफल अपना।
ऋषी ने क्रोध के पुतले[१] को जब आगे खड़ा देखा,
बिराजो आओ बैठो प्रेम और धीरज से फरमाया।।

बुराई, दिल में बैठी थी, भलाई भी लगी कड़वी।
कि बिगड़ा था मजा मुंह का, मिठाई भी लगी कड़वी।।

१५

भभककर बोल उठा राजा कि बैठें तो कहां बैठें,
मुनी बोले कि राजन् आप जी चाहे जहां बैठें।
बिछा है बोरिया-ए[२] बे-रिया[३] भी यह, यहां बैठें,
कुशासन भी उपस्थित है यहां बैठें, वहां बैठें।।

कहा हरचन्द, शब्दों ने न पाई बाट[४] कानों में।
लगाकर वह तो आये थे गजब[५] की डाट[६] कानों में।।

१६

उगलना था उन्हें तो जहर अपना ही वही बोले,
किया था आपने इन्कार क्यों लीला में आने से।
हरी के कीर्तन से द्वेष संन्यासी हो तुम अच्छे,
निरादर रास का भगवान का अपमान कर बैठे।।

सवाले-गर्म का उत्तर हुआ शीतल मधुर बानी।
हकीमे-वक्त[७] ने हिकमत[८] से डाला आग पर पानी।।

---

१. मूर्ति, २. बिछौना, ३. द्वेष भाव रहित, ४. रास्ता, ५. तेज, ६. डाट अन्दर लगाने वाली रोक, ७. उस समय हकीम ने, ८. अक्लमन्दी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७

गजब[१] से जल रही है क्यों निगाहे-गर्म[२] आंखों में,
तमाशा देखता मैं, जो न होता धर्म आंखों में।
बड़े आदर से करता आके घर दुष्कर्म आंखों में,
मगर मैं क्या करूं गैरत[३] थी दिल में, शर्म आंखों में।।

करूं वेदों का आदर या तुम्हारी तुच्छ "आज्ञा" का।
सुनूं फरमान[४] राजा का कि राजाओं के राजा का।।

१८

पिता हैं कृष्ण, माता राधिका, गुण जिनका गाते हो,
जनक जननी की इज्जत[५] रास-लीला में गंवाते हो।
बड़े लायक हो मां को रङ्गभूमी में नचाते हो,
तमाशा देखते हो आप औरों को दिखाते हो।।

यह राधा कृष्ण क्या हैं मूर्ती दुर्वासनाओं की।
भजन की आड़ में है पूर्ती दुर्वासनाओं की।।

१६

सखुन[६] वे लाग था तो मंजिले-तासीर[७] पर पहुंचा,
कमां से तीर छूटा सीनए-नखचीर[८] पर पहुंचा।
गजब[९] पहुंचे पै, गुस्सा क्रोध की तसवीर[१०] पर पहुंचा,
यह सुनना था कि पन्जा[११] कब्जए[१२]-शमशीर[१३] पर पहुंचा।।

बनाया और दीवाने को दीवाना यहां "हू"ने।
वह फौरन खींचकर तलवार बोला क्या कहा तूने।।

---

१. तेज, २. नजर, ३. लज्जा, ४. आदेश, ५. सम्मान, ६. बात, ७. असर के लक्ष्य पर, ८. फेंका गया (निशाना, लक्ष्य), ६. अन्तिम गुस्सा(गुस्से का आखरी दर्जा), १०. फोटो, ११. हाथ, १२. मूठ, १३. तलवार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०

ऋषि संतोष से बैठे रहे अपनी चटाई पर,
पड़े बल तक न पेशानी पै इस बेहद बुराई पर।
मगर आंखों पे आंखें हाथ जा पहुंचा कलाई पर,
हुई कुर्बान[१] फुर्ती ब्रह्मचारी की सफाई पर।।

जमीं पर टेक कर दो कर दिये तलवार के टुकड़े।
उड़ाये वीर्य रक्षा ने कठिन हथयार के टुकड़े।।

२१

वो टुकड़े फेंककर बोले उठा लो जाओ बल अपना,
क्षमा करना, दया करना है दस्तूरुल[२] अमल[३] अपना।
बुरों का भी भला करना नियम है यह अटल अपना,
सकल संसार का कल्याण है नामुल्-बदल[४] अपना।।

यही हम चाहते हैं दे तुम्हें भगवान सद्बुद्धि।
दिले-"बेताब" को हासिल[५] हो सच्चा ज्ञान सद्बुद्धि।।

इत्योम्

१. वलिदान, २,३. काम करने का तरीका, ४. अच्छा बदला, ५. प्राप्त।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के संदर्भ में

पिस्तौल का पश्चात्ताप

—स्व० पं० नारायणप्रसाद बेताब

रुबाई

यह खामए[१]-नय[२] आज है पिस्तौल की नाल,
नुक्ते[३] भी निकलते हैं तो गोली की मिसाल[४]।
मकसूदों[५] - मुरादों[६] - मुद्दआए[७] - दुश्मन,
इक फैर ने 'बेताब' किया सब को हलाल[८]।। (१)
कातिल ने चलाके वो तमंचा खूंरेज[९],
शब्देज[१०] को शुद्धि की लगा दी महमेज[११]।
गुलगीर[१२] ने सर शमा[१३] का क्या काट दिया,
महफिल[१४] में हुई रोशनी अब और भी तेज।। (२)

मुसद्दस

निजामे[१५]-नज्म[१६] किसका ये फकत दो हर्फ गम[१७] के हैं।
मेरे अशआर[१८] कब पाबन्द[१९] अन्दाजे[२०] रकम[२१] के हैं।।
हुरूफ[२२] इनको न समझें आप ये आंसू कलम के हैं।
जिगर के दाग आकर सीनए-कागज पे चमके हैं।।
सुखनगोई[२३] नहीं है ये जले दिल के फफोले हैं।
किसी को बर्गे[२४]-गुल[२५] हैं ये किसी को बम के गोले हैं।।
उड़ाने को निशाना खुद-ब-खुद क्या तीर चलता है?
कमां के जोर से वो जाने[२६] बे-नखचीर[२७] चलता है।।
कलम जिस वक्त कागज पर दमे-तहरीर[२८] चलता है।
किसी का हाथ ही गोया पये[२९]-तदबीर[३०] चलता है।।
न कातिल अपनी हिम्मत से शरे-बांसे[३१] शहीद आया।
किसी तहरीके[३२]-पिनहा[३३] से यहां अब्दुर्रशीद आया।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिलेरी[३४] से कहां पिस्तौल जालिम ने संभाली थी।
गुलामे-जर[३५] ने अपनी जिन्दगानी बेच डाली थी।।
सखावत[३६] भर रही थी दिल में लेकिन जेब खाली थी।
अदावत[३७] थी न कीना[३८] था फकत उजरत[३९] हलाली[४०] थी।।
गलत कहता है कातिल 'मैं हुआ इस्लाम पर कुरबां'।
किया इस्लाम को बदनाम होकर दाम पर 'कुरबां'।।
तलब[४१] पानी किया था हील[४२] से तिशना[४३] दहनी[४४] से।
लहू की प्यास थी बुझती वो क्यों कर सिर्फ पानी से।।
छुपाया जज्बए-नापाक[४५] को गो[४६] लन्तरानी[४७] से।
मगर खूंखार था आखिर न चूका खूंफिशानी[४८] से।।
लहू के दाग फौरन लग गये कातिल के जामे[४९] पर।
गुनहगारी की मोहरें लग गयीं आमालनामे[५०] पर।।
दिलावर धर्मसिंह औ' धर्मपाल आये नजर दोनों।
वहीं मौजूद थे स्वामी के सेवक वीरवर दोनों।।
मगर कातिल के मनसूबे[५१] से मुतलक[५२] बेखबर दोनों।
हुई फैरें तो फौरन पिल पड़े शेरे बबर दोनों।।
बहादुर इनको कहते हैं कि खूनी को दबा बैठे।
भरी पिस्तौल की पर्वा न की सीने पे आ बैठे।।
कशाकश में वहीं जालिम ने उन पर फैर भी कर दी।
मगर कहना पड़ेगा वाह रे शाने-जवांमर्दी।।
बहुत कुछ खून निकला फिर भी चेहरे पर न थी जर्दी[५३]।
न अपने दर्द का था दर्द बल्बे[५४]-जोशे-हमदर्दी[५५]।।
पड़ी है नीच कायरता, चढ़ी है वीरता उस पर।
खिंची तस्वीर दोनों की यह पोजीशन है क्या सुन्दर।।
किया दिल्ली-निवासी को असुर ने स्वर्ग का वासी।
तआज्जुब[५६] है कि कमरे में बहा दी लाल गंगा-सी।।
जईफुल[५७]-उम्र, मोहसिन[५८], नातवां[५९], बीमार संन्यासी।
जनानों की छुरी भी हो न ऐसे खून की प्यासी।।
करेगा कौन ऐसी बुजदिली ऐसी दगाबाजी।
अरे कमबख्त तू तो हीजड़ों से ले गया बाजी।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिये दर्शन दया से तुझ को बीमारी की हालत में।
मिले थे बेतकल्लुफ[६०] तुझ से तकलीफो[६१]-अलालत[६२] में।।
मगर तूने तो गोली मार दी जोशे-जहालत[६३] में।
दिखाया यह कि है यह फर्क असालत[६४] और रजालत[६५] में।।
तुझे मालूम है उस वक्त क्या पिस्तौल कहती थी?
अरे शैतान तेरे मुंह पे वो लाहौल[६६] कहती थी।।
उसे अफसोस था मैं पंजये-नापाक[६७] में आयी।
मुकामे-शर्म है छुपकर मैं जिस पोशाक मे आयी।।
जला जाता है दिल क्यूं दस्ते-गैरतनाक[६८] में आयी।
गजब है इक बुजुर्गे-नातवां की ताक में आयी।।
चला करती हूं मैं मूजी[६९] शरीरों के शरीरों पर।
अधर्मी ने चलाया हाथ पीरों पर फकीरों पर।।
मुझे मालूम होता तो यहां हरगिज न आती मैं।
निशाना अपने लाने वाले बुजदिल को बनाती मैं।।
मिटा है दर्दे-कातिल[७०] जिससे वह गोली न खाती मैं।
हुआ है खूने-नाहक[७१] के सबब[७२] सूराख छाती में।।
कहेंगी देखिये क्या-क्या मुझे हमजोलियां[७३] मेरी।
परिस्तिशगाह[७४] में दाखिल हुई हैं गोलियां मेरी।।
दिसम्बर ईसवी उन्नीस सौ छब्बीस(१९२६) जब आया।
हुई तेईसवीं तारीख और दिन पंच शंबे[७५] का।।
चतुर्थी पौष कृष्णा संवत् उन्नीस सौ तिरासी(१९८३)।
बजे थे कोई साढ़े चार होने आयी थी सन्ध्या।।
उठी बिस्तर से शुद्धी कान पर इक फैर होने से।
हुआ आगाज[७६] का अब खातमा बिल खैर[७७] होने से।।
मुखालिफ[७८] जानो-दिल से गैरे-नाकारा है शुद्धी का।
कि चिढ़चिढ़कर जनाजा जिसने लिख मारा है शुद्धी का।।
नजर आता नहीं उसको तो क्या यारा है शुद्धी का।
जनाजन जिसको समझा है वो गहवारा[७९] है शुद्धी का।।
अभी कमसिन[८०] है यह बच्चा, जवानी आने वाली है।
इधर हर एक बेगम बनके रानी आने वाली है।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसे कुछ अक्ल है जो नेको-बद है जानती देवी।
खरे खोटे को बुद्धि से है जो पहचानती देवी।।
बनेगी आर्या देवी तजेगी भ्रान्ति देवी।
बनी है असगरी बेगम से जैसे शान्ति देवी।।
हमारे पास आयेगी हमारी मां, बहन, बेटी।
कि अस्लो नस्ल से हिन्दू हैं सारी मां, बहन, बेटी।।
न हरगिज़ आर्य नेता हाथ में समसाम लेते हैं।
कि शस्त्रों से नहीं वो शास्त्रों से काम लेते हैं।।
तमंचे का, छुरी का, तेग का कब नाम लेते हैं।
किसी को जब कि गिरता देखते हैं थाम लेते हैं।।
सिखाता धर्म इनका भी तो ये भी कुश्तो-खूं[८१] करते।
कि रखते नाम कारे खैर और कारे जनूं[८२] करते।।
तनासुख[८३] माननेवाले हैं क्या मैदां में रहने को।
कि दम लेना समझते हैं हमेशा दम निकलने को।।
अभी आते हैं स्वामी मुफसदों[८४] का सर कुचलने को।
गये हैं तोशाखाना[८५] तक नया जामा[८६] बदलने को।।
मुहब्बत से मुसलमानों को अपने साथ रक्खेंगे।
निकल आयेगी चोटी जिसके सर पर हाथ रक्खेंगे।।
करोड़ों हिन्दुओं में आज क्या ऐसा नहीं कोई।
संभाले काम उनका होके सज्जादानशीं[८७] कोई।।
करें यह यज्ञ सब मिलकर न हो चीं-बरजिबीं[८८] कोई।
बजाये वेद का डंका कहीं कोई कहीं कोई।।
अगर शुद्धी में श्रद्धा है तो श्रद्धानन्द बन जाओ।
दिले-मकतूल[८९] की खाहिश[९०] के खाहिशमंद[९१] बन जाओ।।
न होगा लाभ मातम[९२] से न अश्कों[९३] की रवानी से।
न कुछ मतलब बन आयेगा हमारी नोहाखानी[९४] से।।
न हासिल[९५] लन्तरानी[९६] से न कुछ जोशे-बयानी[९७] से।
बस अब बन जाओ श्रद्धानन्द लेकिन सावधानी से।।
कि हिन्दू मात्र के नुकसान का नेमुल[९८] बदल है ये।
हमें जो इल्म[९९] है 'बेताब' मोहताजे-अमल[१००] है ये।।

□□□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(स्व० पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' आर्यसमाज के प्रसिद्ध नाटककार तथा कवि थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्माहुति के पश्चात् १ जनवरी, १९२७ को बेताब जी ने उपर्युक्त उर्दू कविता लिखी। इसे कालान्तर में कलकत्ता के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'मतवाला' ने भी संक्षिप्त रूप से प्रकाशित किया था। हमने इस कविता को सम्पूर्णतया उद्धृत किया है। —भवानीलाल भारतीय)

शब्दार्थ :

१. बेकार, २. हुक्के की नाल, ३. उर्दू की वर्णमाला पर लगने वाली विन्दु, ४. सभान, ५. लक्ष्य का पूरा होना, ६. कोई एक जरूरत की मांग, ७. लक्ष्य, ८. मारा, मेहनत की कमाई, ९. खून को गिराने वाला, १०.   , ११. मेजपोश, १२. वत्ती की लौ के धुंए का झाड़ने वाला, १३. मोमबत्ती, १४. सभा, १५. प्रवंध करने की तरतीव, १६. कविता, १७. दुःख, १८. छन्द, १९. बधने वाले, २०. तरीका, २१. लिखने का, २२. शब्द (वहुवचन), २३. शायरी, २४. पत्ती, २५. फूल, २६. लक्ष्य, २७. जिसकी तरफ फेंका गया, २८. लिखना, २९. के लिए, ३०. उपाय, ३१. शूली का बांस, ३२. चलती योजना, ३३. छुपी हुई, ३४. हिम्मत, ३५. धन का दास, ३६. निस्स्वार्थ देना, ३७. (दुश्मनी) वैर ३८. घृ णा, ३९. मजदूरी, ४०. जायज, ४१. मांगना, ४२. वहाना, ४३. प्यासे, ४४. मुंह, ४५. दृ ढ़ भावना, ४६.   , ४७. बढ़ा चढ़ाकर (व्यर्थ) बोलना, ४८. खून बखेरने, ४९. कपड़े, ५०. जीवन के कर्मों का खाता, ५१. योजना, ५२. बिल्कुल, ५३. पीलापन, ५४. बुलबुला, ५५. सहानुभूति, ५६. आश्चर्य, ५७. बूढ़ी (उमर) अवस्था, ५८.परोपकारी (अहसान करने वाला), ५९. कमजोर, ६०. निस्संकोच, ६१. दुःख, पीड़ा, ६२. बीमारी, ६३. अशिक्षितता, ६४. श्रेष्ठता, ६५. कमीनापन, ६६. लानत, ६७. अपवित्र हाथ, ६८. लज्जास्पद, ६९. स्वाभाविक दुष्ट सर्प आदि, ७०. मारने वाला, ७१. अनुचित, ७२. कारण, ७३. सहेलियां, ७४. पूजा-स्थान, ७५. वृ हस्पतिवार, ७६. शुरुआत (शुरू किये हुए) ७७. कुशलता से, खैरियत से, ७८. दुश्मन, विरोधी, ७९. ठहरने की जगह, ८०. छोटी उमर का, ८१. मारधाड़ (जान से मारना), ८२. दीवानगी का काम (बुरा), ८३. पुनर्जन्म, ८४. झगड़ालु, ८५. अस्थायी घर, ८६. वेश (कपड़े), ८७. पूजा-स्थान के महात्मा का घोषित स्थानापन्न, ८८. चूं भी न करने वाला, ८९. जिसकी हत्या की गई है, ९०. इच्छा (उस के दिल की), ९१. इच्छा करने वाला (इच्छुक), ९२. हाथ पीट शोक प्रकट करना, ९३. आंसुओं, ९४. शोक गीत से, ९५. प्राप्त होगा, ९६. ऊंची-ऊंची हांकना, ९७. जोरदार भाषण, ९८. अच्छा बदला, ९९. विद्या, १००. अमल का मोहताज ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं. वीरसेन वेदश्रमी

याज्ञिक आचार संहिता ४५.००

वैदिक सम्पदा (वैदिक वाङ्मय के आधार पर मानवीय जीवन का विवेचन) १७५.००

नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रेरक बोध कथाएँ १५.००

पं. सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता १५.००

WORKS OF SVAMI SATYA PRAKASH SARASVATI

Founders of Sciences in Ancient India (Two Vols.) 800.00

Coinage in Ancient India (Two Vols.) 600.00

Geometry in Ancient India 350.00

Brahmgupta and His Works 350.00

The Critical, Cultural Study of Satapath Brahman In Press

Speeches, Writings and Addresses

Vol.I : VINCITVERITAS 150.00

Vol.II : ARYA SAMAJ : A RENAISSANCE 150.00

Vol.III : DAYANAND : A PHILOSOPHER 150.00

Vol. IV : THREE LIFE HAZARDS 150.00

चित्र

स्वामी दयानन्द (कुर्सी) १८" X २२" ३.००

स्वामी दयानन्द (आसन) १८" X २२" ३.००

स्वामी श्रद्धानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरु विरजानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

पण्डित लेखराम १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वामी दर्शनानन्द १८" X २२" एक रंग ३.००

गुरुदत्त विद्यार्थी १८" X २२" एक रंग ३.००

महात्मा हंसराज १८" X २२" एक रंग ३.००

स्वास्थ्य

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको उपलब्ध हों तो पुड़िया आदि की क्या जरूरत है।

घर का वैद्य—प्याज ७.००

घर का वैद्य—लहसुन ७.००

घर का वैद्य—गन्ना ७.००

घर का वैद्य—नीम ७.००

घर का वैद्य—सिरस ७.००

घर का वैद्य—तुलसी ७.००

घर का वैद्य—आँवला ७.००

घर का वैद्य—नींबू ७.००

घर का वैद्य—पीपल ७.००

घर का वैद्य—आक ७.००

घर का वैद्य—गाजर ७.००

घर का वैद्य—मूली ७.००

घर का वैद्य—अदरक ७.००

घर का वैद्य—हल्दी ७.००

घर का वैद्य—बरगद ७.००

घर का वैद्य—दूध-घी ७.००

घर का वैद्य—दही-मट्ठा ७.००

घर का वैद्य—हींग ७.००

घर का वैद्य—नमक ७.००

घर का वैद्य—बेल ७.००

घर का वैद्य—शहद ७.००

घर का वैद्य—फिटकरी ७.००

घर का वैद्य—साग-भाजी ७.००

घर का वैद्य—अनाज ७.००

घर का वैद्य—फल-फूल ७.००

घर का वैद्य—धूप-पानी १५.००

सभी पच्चीस पुस्तकें पाँच आकर्षक जिल्दों में भी उपलब्ध, कीमत ४५.०० रुपये प्रत्येक

घर का वैद्य (प्याज, लहसुन, गन्ना, नीम, सिरस)

घर का वैद्य (तुलसी, आँवला, नींबू, पीपल, आक)

घर का वैद्य (गाजर, मूली अदरक, हल्दी, बरगद)

घर का वैद्य (दूध-घी, दही-मट्ठा, हींग, नमक, बेल)

घर का वैद्य (शहद, अनाज, साग-भाजी, फल-फूल, फिटकरी)

घर का वैद्य—धूप-पानी ४०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालोपयोगी

हरिशचन्द्र विद्यालंकार

वैदिक शिष्टाचार ३.००

पं. रामगोपाल विद्यालंकार

दयानन्द चित्रावली २५.००
(अनेक बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित)

ब्र. नन्दकिशोर

आचार्य गौरव ५.००

पं. नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि २.५०

सत्यभूषण वेदालंकार एम.ए.

नैतिक शिक्षा—प्रथम २.५०
नैतिक शिक्षा—द्वितीय ३.००
नैतिक शिक्षा—तृतीय ४.५०
नैतिक शिक्षा—चतुर्थ ५.५०
नैतिक शिक्षा—पंचम ५.५०
नैतिक शिक्षा—षष्ठ ६.००
नैतिक शिक्षा—सप्तम ६.००
नैतिक शिक्षा—अष्टम ६.००
नैतिक शिक्षा—नवम ९.००
नैतिक शिक्षा—दशम ९.००

डॉ. देवव्रत आचार्य

योग शिक्षा-१ १२.००
योग शिक्षा-२ १०.००
योग शिक्षा-३ १०.००
योग शिक्षा-४ १०.००

कर्म काण्ड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका ४.००
पंचयज्ञ प्रकाशिका १०.००
वैदिक संध्या १.००
सामाजिक पद्धतियाँ (मदनजीत आर्य) १२.००
संध्या-हवन-दर्पण (उर्दू) ८.००

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द ५.००
गुरु विरजानन्द ५.००
स्वामी श्रद्धानन्द ५.००
धर्मवीर पं. लेखराम ५.००
मुनिवर पं. गुरुदत्त ५.००
स्वामी दर्शनानन्द ५.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

महात्मा हंसराज ४.५०
स्वामी स्वतन्त्रानन्द ४.५०
महात्मा नारायण स्वामी ५.५०
देवतास्वरूप भाई परमानन्द ५.५०

सुनील शर्मा

हमारे बालनायक ९.००
देश के दुलारे ९.००
हमारे कर्णधार ९.००

नीरू शर्मा

आदर्श महिलाएँ १०.००

स्वामी दर्शनानन्द

कथा पच्चीसी ९.००
बाल शिक्षा २.५०

नरेन्द्र गुप्ता

सच का फल ८.००
(कथाएँ उपनिषद की)

डॉ. मनोहर लाल

जीने का सही ढंग (प्रेरक बोध कथाएँ) ८.००

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएँ १२.००

जीवनी

महात्मा आनन्द स्वामी (उर्दू) १०.००

आ. उदयवीर शास्त्री

आचार्य शंकर का काल १०.००

पं. वा. विष्णुदयाल (मॉरीशस)

वेद भगवान बोले १५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

आनन्द गायत्री कथा	१४.००
एक ही रास्ता	१४.००
शंकर और दयानन्द	८.००
मानव जीवन-गाथा	१४.००
सत्यनारायण व्रत कथा	६.००
भक्त और भगवान	१२.००
उपनिषदों का सन्देश	१८.००
घोर घने जंगल में	२२.००
मानव और मानवता	३२.००
प्रभु मिलन की राह	२२.००
यह धन किसका है ?	२२.००
बोध-कथाएँ	२०.००
दो रास्ते	१७.००
दुनिया में रहना किस तरह	१७.००
तत्त्वज्ञान	२२.००
प्रभु-दर्शन	१७.००
प्रभु-भक्ति	१२.००
महामन्त्र	१४.००
सुखी गृहस्थ	७.००
त्यागमयी देवियाँ	९.००
महात्मा आनन्द स्वामी (जीवनी)	२५.००

MAHATMA ANAND SWAMI

Anand Gayatri Katha	30.00
The Only Way	30.00
Bodh Kathayen	40.00
How To Lead Life?	30.00

महर्षि दयानन्द

व्यवहारभानु	४.००
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश	१.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	१.५०
पंचमहायज्ञ विधिः	८.००

ब्र. जगन्नाथ पथिक

सन्ध्या योग ब्रह्म साक्षात्कार (वैदिक सन्ध्या से आलोक-प्राप्ति की पद्धति)	१२५.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

सत्यार्थ प्रकाश (आधुनिक हिन्दी रूपान्तर)	१२५.००
महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१७५.००
षड्दर्शनम्	१५०.००
चाणक्यनीति दर्पण	६०.००
विदुरनीतिः (हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी)	४०.००
ब्रह्मचर्य गौरव	९.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	९.००
कुछ करो कुछ बनो	१२.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१२.००
आदर्श परिवार	१८.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५.००
वैदिक विवाह पद्धति	१५.००
ऋग्वेद सूक्ति सुधा	२५.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२.००
ऋग्वेद शतकम्	१०.००
यजुर्वेद शतकम्	१०.००
सामवेद शतकम्	१०.००
अथर्ववेद शतकम्	१०.००
भक्ति संगीत शतकम्	६.००
चमत्कारी औषधियाँ	१५.००
घरेलू औषधियाँ	१५.००
चतुर्वेद शतकम् (सजिल्द)	५०.००
स्वर्ण पथ	१२.००
प्रभात-वन्दन	८.००
प्रार्थना-प्रकाश	८.००
शिवसंकल्प	८.००
प्रार्थना लोक (सजिल्द) (प्रभात-वन्दन, प्रार्थना-प्रकाश व शिवसंकल्प एकसाथ)	४०.००
वेद सौरभ	१२.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य उदयवीर शास्त्री

न्यायदर्शन भाष्य १५०.००
वैशेषिकदर्शन भाष्य १५०.००
सांख्यदर्शन भाष्य १२५.००
योगदर्शन भाष्य १००.००
वेदान्तदर्शन भाष्य (ब्रह्मसूत्र) १८०.००
मीमांसादर्शन का विद्योदय भाष्य ३५०.००
सांख्यदर्शन का इतिहास २५०.००
सांख्य सिद्धान्त २००.००
वेदान्तदर्शन का इतिहास २००.००
प्राचीन सांख्य सन्दर्भ १००.००
वीर तरंगिणी (लेखों का संग्रह) २५०.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

On The Vedas 35.00
दीप्तिः (विवादास्पद लेखों का संग्रह) ८०.००
आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे ४०.००
सृष्टि विज्ञान और विकासवाद ४०.००

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

सन्ध्या : क्या, क्यों, कैसे १५.००
विवाह और विवाहित जीवन १८.००
जीवात्मा ४०.००
भगवत् कथा (उपनिषदों के आधार पर) १४.००

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ब्रह्मचर्य सन्देश २५.००
वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार १५०.००

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक ज्ञान-धारा (लेखों का संग्रह) ८०.००
महात्मा हंसराज (जीवनी) ६०.००
महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (४ खण्ड) (सम्पूर्ण व्यक्तित्व व कृतित्व) २४०.००
आर्य सूक्ति सुधा (आर्य विद्वानों की सूक्तियाँ) १२.००

प्रो. नित्यानन्द पटेल

पूर्व और पश्चिम ३५.००
सन्ध्या विनय ६.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

बिखरे मोती (आर्य महापुरुषों के संस्मरण व शास्त्रार्थों की नोक-झोंक) ४०.००
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (११ खण्डों में) (सम्पूर्ण कृतित्व व जीवनी) ६६०.००
आर्य समाज के बीस बलिदानी १५..००
श्याम जी कृष्ण वर्मा (जीवनी) २४.००
आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय २५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा १०.००
वैदिक धर्म २५.००

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

सहेलियों की वार्ता २०.००

लेः देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय
अनुः पं. घासीराम

महर्षि दयानन्द चरित (प्रामाणिक-अनूठा जीवन-चरित्र) २५०.००

क्षितीश वेदालंकार

चयनिका (चुने हुए लेखों का संग्रह) १२५.००

पं. रामनाथ वेदालंकार

वैदिक मधुवृष्टि (निबन्ध संग्रह) ६०.००

आ. प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदोद्यान के चुने हुए फूल (वेद-मन्त्रों व सूक्तों का संग्रह) ५०.००

पं. चन्द्रभानु सिद्धान्ताभूषण

महाभारत सूक्ति सुधा ४०.००

पं. विश्वनाथ विद्यालंकार

सन्ध्या रहस्य २५.००

प्रो. रामविचार एम.ए.

आर्य समाज का कायाकल्प कैसे हो ?४.००

पं. नन्दलाल वानप्रस्थी

गीत सागर (अनेक कवियों के गीत-भजनों का संग्रह) २५.००

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सादगी व सौम्यता के प्रतीक

'पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार दिवंगत'

आर्यसमाज के उत्साही एवं कर्मठ कार्यकर्ता पं० सत्यदेव जी विद्यालंक १६ जुलाई १९९६ को हम सब से हमेशा के लिए अलग हो गये। वह कु समय से अस्वस्थ थे। गुरुकुल कांगड़ी से १९३२ में स्नातक की उपाधि प्रा करने के पश्चात् अपने पिता के साथ व्यवसाय में प्रतिष्ठित होकर सफल प्राप्त की तथा विभिन्न सामाजिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अनेक आर्यसभाओं में विशिष्ट पदों पर रहते हुए सेवा करते रहे। अपनी मधुरभाषिता, मिलनसारिता, सेवा एवं सहानुभूति आदि गुणों के कारण वे सब के प्रिय रहे। सादा जीवन व उच्च विचार आपके जीवन का आधार था।

वैदिक साहित्य के प्रति भी आपकी विशेष रुचि रही, निरन्तर स्वाध्याय करते रहे तथा दूसरों को भी लाभ पहुंचाते रहे। 'सन्ध्या योग और ब्रह्मसाक्षात्कार' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ स्व० श्री जगन्नाथ जी के साथ मिलकर लिखा तथा प्रकाशित किया तथा उसे लागत से भी आधे मूल्य पर आर्य जनता तक पहुंचाया।

—वेद कुमार वेदालंकार
आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–I
दिल्ली

श्रद्धाञ्जलि—मेरे पिता

सन् १९८० में कन्या गुरुकुल, हाथरस से आने के पश्चात् आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–१ में मुझे पूज्य पिता जी मिले। पिता जी का जैसा नाम वैसा ही गुण। मेरे विवाह के उपरांत पिता जी प्रतिदिन मुझ से मिलने आते और अपनी सौम्यता एवं स्नेह का वरदहस्त मेरे ऊपर रखते। पिता तुल्य छोटी से छोटी बात वे बताते और पिता का कर्तव्य समझते। मैंने देखा कि गुरुकुल के प्रति उनका बड़ा प्यार था, चाहे कोई भी हो वह अपनी मधुरभाषिता से उसे अपना बना लेते। उनका जन्मदिन इसी का एक उदाहरण है, २ अक्टूबर को उनके घर पर जो भी पहुंचता उसका स्वागत वह बड़ी अच्छी तरह से करते। उनका व्यवहार सादगी एवं सौम्य मुस्कराता हुआ चेहरा आज भी जब सामने आता है, पुरानी स्मृतियां हरी हो जाती हैं।

अपने पिता को शतशः नमन करते हुए अपनी श्रद्धांजलि देती हूं।

—प्रेमलता वेद शिरोमणि
आर्यसमाज, ग्रेटर कैलाश–I, दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

NEW, PUBLICATIONS

By **SWAMI VIDYANAND SARASWATI**

ON THE VEDAS

(A clue to the understanding of the Vedas)

The vedas are the bed-rock on which the edifice of Aryan cultural and civilisation has been raised, whatever is in the Vedas is supreme and final authority in all matters.

This small book is intended to enable the general reader to have an idea of the Vedas without going through the voluminous work, published on the subject. **Rs. 35.00**

Aryavarta *(The original habitat of the Aryans) : Today the greatest hurdle in the way of unity and integrity of India, is the wrong notion that the Aryans from some foreign land invaded this country. In order to understand, to recapture and live upto the best in our culture it is necessary to discover the Aryan discipline, outlook and to corest the secrets of the Vedas.* **Rs. 55.00**

Dayananda *(Architect of modern India) : Dayananda was a visionary, who looked far ahead of his times and visualised a society based on moral values, social justice and equality of opportunity all that in a spiritual background and Indian environment. The present treatise is an elaboration on these focal points.* **Rs. 75.00**

Divine Nector of Mahatma Anand Swami

The only way : *The path which Vedas, Upnishads and Brahman Granthas expounds is the Path of Truth which we have to follow in order to avoid misery, sorrow, disease, poverty.* **Rs. 30.00**

Anand Gayatri Katha : *Contains touching narration of Gayatri in very simple language.* **Rs. 30.00**

Bodh Kathayen : *Collection of didactic tales, each Katha encourages us to lead righteous life.* **Rs. 40.00**

How to lead life : *Which is the best way to live in this world? To answer this swamiji dealt with the various Mantras of Yajur Veda.* **Rs. 30.00**

Other works of the same author under Publication are

Whose Wealth : *Swamiji says that vedas also tells us to earn money but not to accumulate it and consume it for ourself only. Share it with others if you want to get real happiness.*

The Message of Upnishads : *Swamiji believes that only upnishadic spiritualism can solve all our problems and go on to tell how upnishadic knowledge can do it.*

In the Dark Woods : *Interesting discourses on Brhadanaryana and Upnishada.*

VIJAYKUMAR GOVINDRAM HASANAND

4408, Nai Sarak, Delhi-6 (INDIA) ***Tel. : 2914945***

प्रकाशक-मुद्रक अजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिण्टर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi